ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4
आप भी बेमतलब आरओ का उपयोग तो नहीं कर रहे हैं?

रविवारीय, 09 - 15 फरवरी 2020 वर्ष- एक, अंक-27, रांची, कुल पृष्ठ 4 हिन्दी साप्ताहिक R.N.I. No. JHAHIN/2019/78094 www.greenrevolt.news मूल्यः 2 रूपये

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेंट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं ह्वाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

अतिरिक्त कोच की सुविधा

रांची :यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को मद्देनजर रखते हुए रांची रेल मंडल द्वारा निम्नलिखित ट्रेनों में स्थायी तौर पर अतिरिक्त कोच की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी जीससे यात्रियों को यात्रा करने मे सुविधा होगी दिनांक 07.02.2020 से ट्रेन संख्या 13304 रांची - धनबाद इंटर-सिटी एक्सप्रेस में तथा दिनांक 11.02.2020 से ट्रेन संख्या 13303 धनबाद - रांची इंटर-सिटी एक्सप्रेस मे 05 अतिरिक्त, सामान्य द्वितीय श्रेणी कोच स्थायी तौर पर लगाए जायेंगे वहीं दिनांक 12फरवरी से ट्रेन संख्या 13319/13320 रांची - देवघर - रांची एक्सप्रेस मे 05 अतिरिक्त, सामान्य द्वितीय श्रेणी कोच स्थायी तौर पर लगाए जायेंगे।

कोल इंडिया लिमिटेड अध्यक्ष ने किया सीएमपीडीआई का दौरा

रांची : प्रमोद अग्रवाल अध्यक्ष, कोल इंडिया लिमिटेड ने समीक्षा बैठक के लिए सीएमपीडीआई का दौरा किया। इस अवसर पर सीएमपीडीआई के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एस0 सरन, कोल इंडिया के निदेशक (तकनीकी) विनय दयाल, सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी/ईएस) श्री के0के0 मिश्रा, निदेशक (तकनीकी/आरडीएंडटी/सीआरडी) श्री आर0एन0झा, निदेशक (तकनीकी/पीएंडडी) श्री ए0के0 राणा, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री सुमीत कुमार सिन्हा एवं सीएमपीडीआई तथा क्षेत्रीय संस्थान-3 के अधिकारीगण उपस्थित थे।

बीएचयू अल्यूमनी असोसियेशन द्वारा स्थापना दिवस मनाया गया

रांची 08 फरवरीः बीएचयू अल्यूमनी असोसियेशन, रांची चैप्टर द्वारा सीएमपीडीआई के ''मयूरी हॉल'' में स्थापना दिवस-2020 समारोह मनाया गया। इस अवसर पर सीएमपीडीआई के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री एस0 सरन एवं रांची चेप्टर के अध्यक्ष श्री एस0 सरन की धर्मपत्नी श्रीमती मीता सरन, निदेशक (तकनीकी/पीएंडडी) ए0के0 राणा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संगीता राणा, सीसीएल के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री एस0के0 श्रीवास्तव एवं रांची चेप्टर के सचिव मनोज कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रूपाली गुप्ता ने समारोह का विधिवत शुरूआत कीं।

नहीं रुक रहा एकल प्लास्टिक का उपयोग

मुख्य संवाददाता

रांची : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की एकल प्लास्टिक पर रोक की पहल कुछ दिनों की सजगता के बाद फेल होती दिख रही है। पिछले साल प्रधानमंत्री ने देशवासियों से यह अपील की थी कि हम एक बार उपयोग होने वाले प्लास्टिक थैलों और उत्पादों का बहिष्कार करेंगे। इसके दुष्प्रभावों को बता कर जोर शोर से बहुत सारे आयोजन भी किये गये। लेकिन अंततः एकल प्लास्टिक पर अंकुश का यह प्रयास असफल होता दिख रहा है। कुछ समय की सख्ती और चिंता के बाद बड़े दूकानदारों से लेकर सड़क किनारे बाजार सजाने वालों ने फिर से प्लास्टिक थैलों में सामान बेचना प्रारंभ कर दिया है। अब उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं रह गया है। केवल बड़े और सजग दूकानदार ही अपने ग्राहकों को सामान देते समय मानक स्तर के प्लास्टिक बैगों में सामान दे रहे हैं। तीन महिने पहले तक सड़क किनारे के दूकानदार भी कानून के भय से प्लास्टिक के कैरी बैग से परहेज कर रहे थे। अब कानून की शिथिलता और लोगों की लापरवाही के कारण फिर से एकल प्लास्टिक के समानों का उपयोग शुरू हो गया है। हालांकि अभी भी पहले की तरह इन प्लास्टिक थैलों का उपयोग धड़ल्ले से नहीं हो रहा है, पर यह छोटे दूकानदारों के यहां वापस प्रचलन में आ रहा है। दूकादार और आम आदमी दोनों ही इसे लेकर फिर से पहले की तरह ही लापरवाह से दिख रहे हैं।

कई जगहों पर हालत ये है कि फल वाले फल तौल कर बिना ग्राहकों से पूछे प्रतिबंधित पॉलीबैग में ही फल दे रहे हैं।

बड़ी पर्टियों में एकल उपयोग होने वाले कप चम्मच भी है कभी नष्ट न होने वाले प्लास्टिक

आम लोग ही पॉलीबैग के रोक में हैं बाधक

आम आदमी को घर से थैला या बैग लेकर बाजार जाने की आदत नहीं है। युवा अपने बाइक में डिक्की तक लगाना पसंद नहीं करते। खरीददारी के लिये खाली हाथ हीं बाजार जाने की आदत के कारण ही छोटे दूकानदार प्लास्टिक के थैलों का उपयोग फिर से करने लगते हैं। ठेले खोमचों वालों से लेकर सड़क किनारे सब्जी बेचने वाले ही मुख्य रूप से इन बैन हो चुके प्लास्टिक थैलों का उपयोग कर रहे हैं।

यूपी सहित अन्य राज्यों में सख्ती झारखंड में लापरवाही

उत्तरप्रदेश में एकल और प्रतिबंधित प्लास्टिक के खिलाफ पुलिस ने सख्ती बरती हुई है। वहां हाल ही में मथुरा नगर निगम ने प्रतिबंधित पॉलिथीन बेचने वालों के खिलाफ अभियान चलाया। इस दौरान अधिकारियों ने शहर में कई स्थानों पर छापा मारा। भरतपुर रोड से प्रतिबंधित पॉलिथीन ले जाते ट्रैक्टर को पकड़ा। इसमें करीब 60 किलो प्रतिबंधित पॉलिथीन मिली। निगम अधिकारियों ने मालिक पर जुर्माना लगाया है। नगर निगम अधिकारियों ने शहर में प्रतिबंधित पॉलिथीन का प्रयोग करने वाले दुकानदारों के खिलाफ अभियान चलाया। वहां निगम के कर्मचारियों द्वारा इस लदे सामान की तोल तथा जुर्माना तय करने की कार्रवाई की जाती है। वहीं झारखंड में प्लास्टिक कैरीबैग पर रोक प्रहसन बन कर रह गया है। सालों पहले से कई बार इसे बैन करने, दूकानदारों से जुर्माना वसूलने का काम कुछ दिन हुआ लेकिन कुछ समय बाद इसका उपयोग फिर से छुट कर होने लगता है। पिछले साल केंद्र सरकार ने गंभीरता से इस पर रोक के प्रयास किये। सांसदो से लेकर आमजन ने इसके कुप्रभाव को देख कर इसके उपयोग से परहेज का आह्वान भी किया।पूरे देश में पर्यावरण को खराब मानी जाने वाली खराब कैटेगरी की प्लास्टिक से बने सामान तथा पॉलिथीन पर प्रतिबंध लगा। इसके बाद भी पार्टियों से लेकर बहुत सारे रेस्टोरेंट तक में एक प्लास्टिक से बने कप, प्लेट चम्मच, ग्लास आज भी उपयोग हो रहे हैं।

बुजूर्गो के लिए सबसे अच्छी दवा उनकों स्नेह एवं प्यार देना है :सीएमडी सीसीएल

संवाददाता

रांची : फरवरी को आईआईसीएम, कांके रोड, रांची में सेन्ट्रल कोलफील्डस लिमिटेड एवं आईआईसीएम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कोल इंडिया मेडिकल कॉफ्रेंस-2020 का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सीसीएल के सीएमडी गोपाल सिंह एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में सीसीएल के निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) भोला सिंह, निदेशक (वित्त) एन.के. अग्रवाल, मेडिका के निदेशक डॉ आलोक रॉय, मैक्स सुपर स्पेशियलिटी, नई दिल्ली के डॉ राजीव राठी, कोल इंडिया के पूर्व कार्यकारी निदेशक डॉ ओ.पी. सक्सेना उपस्थित थे। अवसर विशेष पर आईआईसीएम के निदेशक डॉ पी.सी. मिश्रा, पूर्व ईडीएमएस कोल इंडिया, डॉ आर. आर्या, सीएमएस सीसीएल, डॉ. डा सी.पी. धाम, सीएमओ, सीसीएल गांधीनगर, सीएमओ डॉ डी.के.एल. चौहान डॉ वी.के. सिंह, सीएमओ, डॉ रत्नेश जैन, डॉ मंजू मिश्रा, पूर्व सीएमएस सीसीएल डॉ बी.एम.के. सिन्हा सहित सीसीएल, कोल इंडिया एवं अनुषंगी कंपनियों के प्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

समारोह के मुख्य अतिथि गोपाल सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि इस वर्ष का मेडिकल कॉन्फ्रेंस का थीम 'केयर फॉर इलेड्री' (बुजूर्गों की देखरेख) है जो वर्तमान परिपेक्ष्य में पूरे हिन्दुस्तान के लिए महत्-वपूर्ण है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा व्यक्ति जब बीमार रहता है, पीड़ा में रहता है तब उस पल चिकित्सक उन्हें भगवान के रूप में आकर उनका ईलाज करते हैं। गोपाल सिंह ने अपने संबोधन में चिकित्सको की प्रशंसा करते हुए चि कित्सकों के समाज में योगदान की चर्चा की और कहा कि आगे भी इस तरह का कॉन्फ्रेंस करने की जरूरत है जिससे प्रतिभागियों को नवीनतम जानकारी मिलती रहे और अपने क्षेत्र में वे लोगों की मदद कर सके। मुख्य अतिथि ने सीमेकॉन की थीम पर अपना व्यक्तिगत सलाह देत हुये कहा कि बुजूर्गो के लिए सबसे अच्छा दवा उनकों स्नेह एवं प्यार देना है और अगर यह कारगर नहीं हो तो उसे स्नेह और प्यार का डोज बढ़ा दें। ज्ञातव्य हो कि 06 फरवरी को ही स्वास्थ्य के महासग्राम सीमेकॉन का आगाज लाईव ईएनटी कार्याशाला के साथ कर दिया गया था। कार्याशाला में अपोलो इंटरनेशनल अस्पताल, अहमदाबाद, गुजरात के कान, नाक एवं गला विभाग के निदेशक डॉ (प्रो.) राजेश विश्वकर्मा ने विभिन्न रोगिया का तीन लाईव ऑपरेशन कर प्रतिभागियों को नवीनतम चिकित्सा पद्धतियों को बारिकी से बताया।

निर्यात योग्य मछलियों के कृषि विकास पर हुआ सम्मेलन

रांची : झारखंड में निर्यात योग्य मछलियों के जल कृषि विकास पर चार फरवरी को मत्स्य कृषि विकास प्रशिक्षण केंद्र धुर्वा में एक दिवसिय सम्मेलन का उद्घाटन डॉ. एसएन द्वीवेदी निदेशक मत्स्य झारखंड रांची के द्वारा किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन मत्स्य निदेशालय झारखंड रांची केद्वारा समुद्री उत्पाद विकास निर्यात प्राधिकरण भुवनेश्वर के सहयोग से किया गया।कार्यक्रम में मुख्यतः सी फूड केनिर्यात की संभावनाओं पर चर्चा की गयी।

मशरुम उत्पादन बना ग्रामीण पोषण सुरक्षा और रोजगार का साधन

संवाददाता

राजधानी रांची से सटे कांके स्थित बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में सभी प्रकार के मशरुम उत्पादन की तकनीकी जानकारी दी जाती है. झारखण्ड के आलावा दुसरे राज्य के लोग भी यहाँ प्रशिक्षण लेकर मशरुम का व्यावसायिक उत्पादन कर रहे है.

मशरुम विभिन्न प्रकार के होते है. इनमें सफेद बटन मशरुम (अगेरिकस बाइस्पोरस) की खेती मध्य सितम्बर से मध्य मार्च माह तक, धान पुआल खुम्ब (वोल्वेरिएला प्रजातियाँ) की मई से मध्य अगस्त माह तक, आयस्टर मशरुम (प्लूरोट्स प्रजातियाँ) का अगस्त से अप्रैल तथा दुधिया मशरुम (कैलोसाइबी इण्डिका) की खेती मार्च से मध्य अगस्त माह तक उत्पादन किया जाता है.

जाड़े के मौसम में बटन मशरुम की खेती उपयुक्त होता है.

विश्वविद्यालय के मशरुम उत्पादन ईकाई में सितम्बर से जनवरी माह तक रांची, खूँटी, सिमडेगा, रामगढ, लातेहार, पलामू, बोकारो एवं हजारीबाग जिले के आलावा होशियारपुर (पंजाब) एवं मुंगेर (बिहार) के कुल 160 लोगों ने प्रशिक्षण लिया। ....शेष पेज3 पर

रांची के एक हजार आंगनबाड़ी केन्द्रों में लगेंगे वाटर प्यूरीफायर

संवाददाता

रांची :जल्द ही रांची जिले के एक हजार आंगनबाड़ी केन्द्रों में नन इलेक्ट्रिक वाटर प्यूरीफायर लगेंगे। आज दिनांक 06 फरवरी 2020 को उपायुक्त रांची श्री राय महिमापत रे ने वाटर प्यूरीफायर वितरण का शुभारंभ किया। जिला समाज कल्याण द्वारा रांची समाहरणालय स्थित उपायुक्त सभागार में आयोजित कार्यक्रम में 10 आंगनबाड़ी सेविकाओं को वाटर प्यूरीफायर दिया गया। कार्यक्रम में इसके अलावा आंगनबाड़ी केन्द्रों के लिए गैस चूल्हा भी दिया गया। उपायुक्त श्री रे ने गैस चूल्हा वितरण का शुभारंभ करते हुए पांच आंगनबाड़ी सेविकाओं को गैस चूल्हा प्रदान किया। इस दौरान जिला समाज कल्याण पदाधिकारी श्रीमती सुमन सिंह, एपीसीएल के स्टेट हेड, स्वस्थ भारत प्रेरक अनन्या सेठ, सीडीपीओ सदर उपस्थित थीं।

सीएसआर के तहत सहयोग कर रहा एचपीसीएल

जिले के 1000 आंगनबाड़ी केन्द्रों में वाटर प्यूरीफायर लगाने में हिन्दुस्तान पेट्रोलिमय कॉरपोरेशन लिमिटेड सीएसआर के तहत सहयोग कर रहा है। कार्यक्रम में उपस्थित हिन्दुस्तान पेट्रोलिमय कॉरपोरेशन लिमिटेड के स्टेट हेड ने कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों में स्वच्छ पानी मिले और लोग अशुद्ध पेयजल से होनेवाली बीमारियों की चपेट में न आयें इस उद्देश्य से जिला प्रशासन पहल कर रहा है जिसमें एचपीसीएल सीएसआर के तहत राशि देगा।

कोलकाता से आयी टीम ने दिया डेमो

टाटा स्वच्छ की ओर से कोलकाता से आयी टीम ने वाटर प्यूरीफायर के सेटअप के बारे में सभी आंगनबाड़ी सेविकाओं के सामने डेमो दिया। सभी को बताया गया कि किस तरह से वाटर प्यूरीफायर को इंस्टॉल करना है। इस दौरान आंगनबाड़ी सेविकाओं ने वाटर प्यूरीफायर की साफ-सफाई से संबंधित सवाल भी पूछे। रीना देवी,मुन्नी देवी,सबिता देवी,कांशो देवी,मालती देवी,फुलेश्वरी देवी,शोभा देवी,सुनीता कच्छप,पार्वती देवी,ललिता देवी कों वाटर प्यूरीफायर दिया गया वहीं धर्मशीला श्रीवास्तव,सुषमा पूनम कुजूर,सुमन कुमारी,पूनम गाड़ी,करमी लकड़ा को गैस चूल्हा दिया गया।

जलवायु परिवर्तन से टिड्डियों का हमला

2020 के पहले दिन पश्चिमी विक्षोभ, असामान्य मौसम, बाढ़ और सूखे का जलवायु परिवर्तन से संबंध पर चर्चा हुई। चर्चा में सूखे के बाद बाढ़, बढ़ती चक्रवात की घटनाएं, खेतों पर टिड्डी दल के हमले जैसी घटनाओं को जलवायु आपातकाल माना। कार्यक्रम में मौजूद विशेषज्ञों ने कहा कि इस वक्त जिस भी समस्या पर नजर जाती है, चाहे वह कृषि से संबंधित हो या पलायन हो, हर जगह जलवायु परिवर्तन जिम्मेदार दिखता है। पहले भी मौसम में असमानता देखी गई है लेकिन हाल के वर्षों में इसका रूप बदल गया है। एक ही स्थान पर बाढ़ और सूखा की घटनाएं हो रही हैं। लोगों पर दोनों स्थितियों का असर लंबे समय तक रहता है और इससे उनकी आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होती है।

Software Problem, Motherboard Chip-Level Repair, Laptop AC Adapter Repair and Replacement, Laptop LCD Screens Repair and Replacement, Dead Laptop Problems, No Display Problem, LCD Dim Display Problem, LCD White Display Problem, BIOS Password Problem, all type of Laptop repair and service

- Repair your laptop with 3-month warranty.

info@ezonecare.in, ezonecare.in
Rospa Tower 3RD Floor, Main Road, ranchi
93108 96575, 70047 69511
Mon - Fri 10:30 am - 7:00 pm
SUNDAY CLOSED

अखिलेश अंबष्ठ ने एटीआई कैंपस के दो एकड़ खराब हो चुकी जमीन को भगीरथ प्रयास से बनाया उपजाऊ, आज उपज रही हैं सब्जियां

अलकतरा से बर्बाद जमीन को परिश्रम से बनाया लहलहाता खेत

रांची : कभी अलकतरे को डंप करने से तीन एकड़ की जमीन बर्बाद हो चुकी थी। इस जमीन पर अलकतरे भरे ड्राम और गड्ढे थे। पूरी जमीन पर एक मोटी परत अलकतरे की जमी हुयी थी जो गर्मियों में पिघल कर सड़क पर आ जाती थी। आज उस जमीन पर हरी फसल, बगीचे और नर्सरी के साथ ही कई मसालों के पेड़ पौधे लहलहा रहे हैं। और यह सब सिर्फ एक व्यक्ति अखिलेश अंबष्ठ के भगीरथ प्रयास से संभव हुआ है। रांची में आड्रे हाउस के सामने स्थित श्री कृष्ण लोक प्रशासन संस्थान के कैंपस का पूर्वी हिस्सा जो रांची कॉलेज की ओर जाता है कभी अलकतरे के डंप होने के चलते बर्बाद हो चुका था। जमीन पर एक तिनका भी नहीं उग सकता था। आज से कुछ साल पहले इस जमीन के एक हिस्से पर सरकार ने निगम पार्क बनवा दिया। पार्क बनने के बाद भी यह लंबे समय तक उपेक्षित पड़ा रहा। कहते हैं कि पार्क की जमीन अलकतरे के कारण ऐसी बर्बाद हुई थी कि वहां बिजली से चलने वाले झूलों और वायरिंग से जमीन में भी करंट आ जाती थी। इस बर्बाद हो चुकी जमीन के

तकरीबन दो एकड़ जमीन को जो आज एटीआई महानिदेशक आवास के कैंपस में है उसे उपजाऊ और उपयोगी बनाने का बीड़ा उठाया अखिलेश अंबष्ठ जी ने। और उनके अथक प्रयास से यह दो एकड़ जमीन हरयिाली का पर्याय बन चुकी है। इस ऊसर हो चुकी जमीन से परिश्रम करके अखिलेश अंबष्ठ ने अलकतरे को पूरी तरह से निकलवाया और इसमें खुद से बनाये प्राकृतिक खाद को डाल कर पहले खेत को कृषि योग्य बनाया। चार साल पहले उनके शुरू किये गये इस प्रयास को देख कर कई लोग पागलपन करार देते थे। अखिलेश अंबष्ठ जी बताते हैं कि, जब उन्होंने अनुमति मिलने के बाद इस बर्बाद हो चुकी जमीन को साफ करवाना प्रारंभ किया तो कई मित्रों और करीबियों ने कहा कि इस जमीन में कुछ भी उगाना संभव नहीं। ये बेकार का प्रयास है, लेकिन उन्होंने अपने शौक और जुनून के कारण इसे साफ करवाने का काम जारी रखा। अखिलेश अंबष्ठ जी बताते हैं कि, इस पूरे काम में उनका अपना कोई निजी स्वार्थ नहीं रहा। ऐसा करना उनका पैशन है और कृषि एवं बागवानी उनका जुनून है। इसी जुनून में उन्होंने दो एकड़ की जमीन को साफ करवा कर सभी तरह की साग सब्जियों की खेती की जिसकी फसल आज यहां लहलहा उठी है। अखिलेश अंबष्ठ जी के परिश्रम से इस खेत में आलू, प्याज, धनिया, गाजर, कोबी की खेती तो हो ही रही है साथ ही यहां के खर पतवार और गोबर से यह केचुआ खाद भी बनाते हैं जो यहां के खेतों में उपयोग हो जाता है।

इस जमीन में गोलमिर्च, दालचीनी के पौधे लगाने के अलावा अखिलेश जी ने अपना एक नर्सरी भी तैयार कर दिया है। जिसमें सजावटी पेड़ों के हजारो पौधे हैं। इस जमीन का एक हिस्सा आज भी दलदली है और उसमें हमेंशा पानी जमा हुआ रहता है। अखिलेश जी बताते हैं कि उसे साफ करवा कर और खुदवा कर एक छोटा तालाब भी बनवाना है। अखिलेश अंबष्ठ जी ने दिनदयाल नगर स्थित आइएएस आफिसर्स क्लब कैंपस में एक से एक रेयर पौधों का एक बगीचा भी तैयार कर रखा है। उसमें कपूर, सिंदूर, रूद्राक्ष, दालचीनी, लौंग के पेड़ हैं। अखिलेश अंबष्ठ उन लोगों के लिये प्रेरणा हैं जो प्रकृति से लगाव रखते हैं और शहर में रहते हुये भी पर्यावरण और हरियाली के लिये कुछ करना चाहते है।

संयमित और सुरक्षित हो मांसाहार

विज्ञान के अनुसार मनुष्यों में मांसाहार ताकत का संचार तो करता है, पर साथ ही कई रोगों का कारक भी बनता है। मांसाहर कई बार आवश्यक नहीं होता बल्कि हम स्वाद के लिये मांसाहार करते हैं। इस चक्कर में मनुष्य अपनी सीमायें लांघ जाता है और उन वर्जित जीवों का भी भक्षण करने लगता है जो खतरनाक बैक्ट्रिया और वायरस से ग्रस्त होते हैं और मनुष्यों के शरीर में आकर किसी भयंकर महामारी को पैदा करते हैं। आज चीन में कोरोना वायरस का जानलेवा हमला इसी मूर्खता का नतीजा है। अब तक जो जानकारी संज्ञान में आ रही है वो ये है कि चमगादड़ या सांप जैसे किसी जीव से कोरोना वायरस मनुष्यों के शरीर में आया और जानलेवा बन गया।

भारत में मांसाहार में सीमित जानवरों का मांस ही खाया जाता है। ऐसा नहीं है कि चीन, कोरिया और जापान की तरह हम किसी भी जीव का भक्षण कर जायें। चीन में किसी भी तरह के जीव के मांस भक्षण की संस्कृति है। वहां सांप कुत्ते बिल्ली कछुये और कीड़े मकोड़ों तक को अधपके तौर पर खाने की आदत उन्हें भारी पड़ रही है। जानकार बताते हैं कि चमगादड़ या सांप जैसे इन्ही जीवों के भक्षण के कारण ही किसी जीव से कोरोना वायरस मनुष्यों में आ गये और आज चीन भयानक महामारी से संकट में है।

दक्षिण एशिया के कई देशों में विभिन्न प्रकार के जीवों को मार कर खाने की आदत है। चूहे, मेढक और कुछ ऐसे जीव भी जिन्हें हम भारतीय वर्जित मानते हैं। इन देशों में एक और खतरनाक आदत है कि वो ज्यादतर भोजन को अधपका ही खाते हैं उनका मानना है कि ऐसा अधपका भोजन ज्यादा पौष्टिक होता है और ज्यादा पका देने से उसकी पौष्टिकता नष्ट हो जाती है। हकीकत में ऐसे अधपके मांसाहारी भोजन में खतरनाक बैक्ट्रिया या वायरस जीवित रह जाते हैं जो मनुष्य के लिये मौत का कारण बन जाते हैं। भारत में धार्मिक मान्यताओं के कारण भी लोग मांसाहार से दूर रहते हैं। यह चीज अंततः भारतीयों के स्वास्थ्य के लिये अच्छा ही है। यूरोप और अमेरिका में भी लोग मांसाहार त्याग रहे हैं। अब मांसाहार अच्छे स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है यह थ्यौरी गलत साबित हो रही है। वैसे भी मेडिकल साइंस यह साबित कर चुका है कि मांसाहारी व्यक्ति के रोगी होने की संभावना ज्यादा रहती है। ऐसे में हम भारतीय संयमित और सुरक्षित मांसाहार करें यही हमारे लिये श्रेयस्कर होगा।

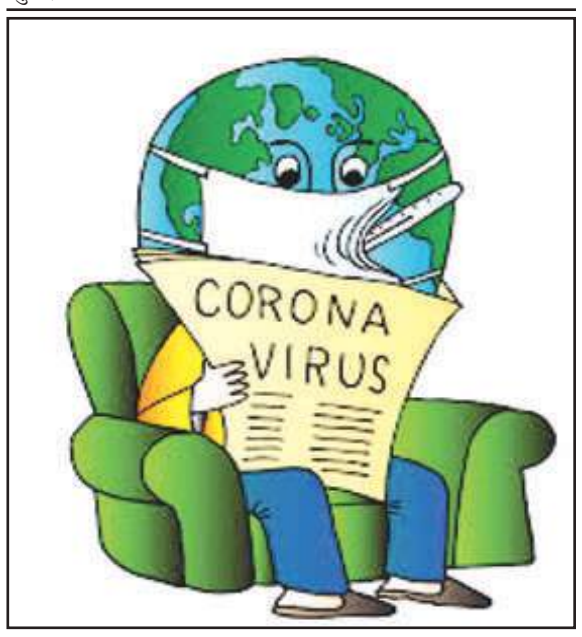

इको सिस्टम चरमराने का संकेत है जीवों का विस्थापन

जीव जंतुओं की करीब 2,000 प्रजातियां अपना घर छोड़ कहीं और जाने पर मजबूर हैं। यह इको सिस्टम के चरमराने की शुरुआत है। जल्द ही इंसान भी इसकी कीमत चुकाएगा।

जलवायु परिवर्तन जीवों को मौसमी बदलावों के मुताबिक ढलने या नया बसेरा खोजने पर मजबूर कर रहा है। बिल्कुल यही हाल समुद्री जीवों का भी है, जैसे मूंगे। पानी का तापमान और प्रदूषण बढ़ने से मूंगे भारी खतरे में हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर समुद्री जल का तापमान दो डिग्री सेल्सियस और बढ़ा तो ज्यादा कोरल जिंदा नहीं बचेंगे। उनकी मौत का मतलब होगा, मछलियों और समुद्री वनस्पतियों की कई प्रजातियों का खात्मा।

सारस और अन्य प्रवासी पंछी अभी से खुद को ढालने लगे हैं। पहले वे सर्दियां अफ्रीका में बिताया करते थे, वहां अथाह मात्रा में भोजन में भी मिलता था। लेकिन अब ये पंछी अपने घरों में रहने लगे हैं। इसका असर अफ्रीका के इकोसिस्टम पर पड़ सकता है। कम पंछियों का मतलब है, उन शिकारियों की संख्या कम होना जो टिड्डी जैसे कीटों को खाते हैं।

पेड़ की छाल में रहने वाले झींगुर जैसे परजीवियों को जलवायु परिवर्तन का फायदा होगा। ज्यादा गर्मी और कम बारिश की वजह से पेड़ों की खुराक प्रभावित होगी और उनका आत्मरक्षा तंत्र कमजोर पड़ेगा। चीड़ की एक प्रजाति स्प्रूस का सारा जंगल इस परजीवियों से उजड़ने लगा है।बढ़ता तापमान अफ्रीकी देश तंजानिया के सेरेंगेटी इलाके के इकोसिस्टम में दखल देने लगा है। इन घास के मैदानों में जेब्रा और नीलगाय हमेशा वर्षा के साथ इलाका बदलते थे। लेकिन बार बार लौटते और लंबे होते सूखे की वजह से अब ये जानवर कहीं और पानी खोजने पर मजबूर हो रहे हैं। पानी के चक्कर में वे रास्ता भटक कर इंसानी रिहाइश वाले बड़े इलाकों की तरफ बढ़ रहे हैं।

फिर वे खेती के लिए भी खतरा बनते हैं और आसानी से शिकारियों का शिकार भी बनते हैं। जलवायु परिवर्तन और प्रजातियों के लुप्त होने के बीच अटूट संबंध है। वैज्ञानिक दोहरे संकट की चेतावनी दे रहे हैं। इसके मुताबिक आने वाले दशकों में 10 लाख प्रजातियों के लुप्त होने का खतरा पैदा हो जाएगा।

कोरोना वायरसः निबटने को कितनी है तैयारी?

देवांग्शु दत्ता

चीन ने गत 31 दिसंबर को विश्व स्वास्थ्य संगठन को सूचित किया था कि उसके हुबेई प्रांत की राजधानी वुहान में कुछ लोग कोरोनावायरस से संक्रमित हुए हैं। इस वायरस के संक्रमण का पहला मामला चीन में 8 दिसंबर को ही सामने आया था। अब तक यह वायरस 30 हजार से अधिक लोगों को अपनी चपेट में ले चुका है और इससे 800 से अधिक की मौत हो चुकी है। एक करोड़ से अधिक आबादी वाले वुहान और कुछ अन्य शहरों को अलग-थलग करने की कोशिशों के बावजूद इस घातक वायरस का प्रसार थम नहीं रहा है।

इसका प्रसार दुनिया के कई देशों में हो चुका है। यह भारत में भी दस्तक दे चुका है। वुहान यूनिवर्सिटी से लौटी केरल निवासी एक छात्रा को संक्रमित पाया गया है और कई संदिग्धों की अभी जांच चल रही है। चीन की करीब चार करोड़ आबादी नो-ट्रैवल जोन घोषित किए जा चुके इलाके में रहती है। चीन में कई उड़ानें रद्द की जा चुकी हैं। चीन से आने वाले यात्रियों को दो हफ्ते तक निषिद्ध रखने की बात ब्रिटेन ने की है और भारत भी इसी तरह का प्रतिबंध लगा चुका है। यह जानवरों एवं पक्षियों से फैलने वाला वायरस है जो इंसानों को भी संक्रमित कर देता है। मसलन, चीन में ही दस्तक देने वाला सार्स वायरस भी चमगादड़ों एवं कस्तूरी बिलाव से इंसानों तक पहुंचा था। माना जाता है कि वुहान का नॉवेल कोरोनावायरस भी किसी जानवर या पक्षी से ही इंसान तक पहुंचा है और अब यह एक से दूसरे इंसान तक फैलता जा रहा है। जहां इस बीमारी में फ्लू से मिलते-जुलते लक्षण नजर आते हैं वहीं कई दिनों तक संक्रमण के बाद भी कोई लक्षण नहीं दिखते हैं। संक्रामक बीमारियों का प्रसार कई कारणों पर निर्भर करता है जिनमें से एक बढिय़ा ढांचागत आधार भी है।

इक्कीसवीं सदी में संक्रमित लोग कुछ ही घंटों में दुनिया के दूसरे छोर पर जा सकते हैं। और चीन के पास बेहतरीन ढांचागत आधार होने से वहां से संक्रामक बीमारी के तीव्र प्रसार की आशंका और अधिक है। इसके पहले हम 2003 में भी सार्स के संक्रमण के समय इसे देख चुके हैं। चिकित्सा क्षेत्र के जानकार किसी बीमारी की संक्रामक क्षमता को बेसिक रिप्रोडक्शन नंबर (आर0) की गणना से आंकते हैं। आर0 का आशय इससे है कि कोई संक्रमित व्यक्ति स्वस्थ या मृत होने के पहले औसतन कितने लोगों को संक्रमित कर सकता है? जिस बीमारी का आर0 अधिक होता है वह उतना ही अधिक संक्रामक मानी जाती है। अगर आर0 एक से कम है तो फिर वह बीमारी खुद-ब-खुद सिमट जाने वाली है और धीरे-धीरे खत्म हो जाएगी। अगर आर0 एक से अधिक है तो फिर संक्रमित व्यक्ति को अलग न रखने पर बीमारी फैलती जाएगी। आर0 संख्या में काफी भिन्नता भी हो सकती है। मसलन, इन्फ्लुएंजा का आर0 नंबर 2 से 3 होता है जबकि खसरा का आर0 12 से 18 तक होता है। सामान्य सर्दी-जुकाम जैसा बेहद संक्रामक वायरस भी घातक नहीं होता है लिहाजा उससे डरने की जरूरत नहीं होती है। लेकिन इबोला जैसी उच्च घातक दर वाली एक संक्रामक बीमारी बेहद डरावनी होती है।

जहां तक कोरोना का सवाल है तो इसके आर0 नंबर और न ही इसकी मृत्यु दर के बारे में ही अधिक सटीक आंकड़े उपलब्ध हो पाए हैं। लेकिन शोधकर्ता प्रारंभिक अनुमान लगा रहे हैं। कई लेखकों की भागीदारी वाले दो शोध-पत्र सामने भी आ चुके हैं। हॉन्गकॉन्ग की एक शोध टीम द्वारा प्रकाशित शोध-पत्र में कहा गया है, 'हमारा अनुमान है कि इस वायरस का माध्य आर0 2.24 से लेकर 3.58 के बीच है और मामले सामने आने की दर दोगुनी से आठ-गुनी है।' अगर आर0 नंबर को सबसे निचले स्तर 2.24 पर भी रखें तो इसका मतलब है कि यह बीमारी तेजी से फैलने वाली है।वहीं ग्वांगतोंग प्रांत के बीमारी नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र ने अपने शोध-पत्र में कहा है कि कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद उसके लक्षण उजागर होने में 4.8 दिन लगते हैं। एक बार लक्षण सामने आने के बाद 2.9 दिन में मरीज को अलग रखने की नौबत आ जाती है जबकि सार्स वायरस के मामले में यह स्थिति 4.2 दिन में आती है। इसके मुताबिक 'महामारी फैलाने के लिहाज से सार्स की तुलना में नॉवेल कोरोना अधिक जोखिम वाला है। हालांकि सार्वजनिक स्वास्थ्य के स्तर पर किए गए प्रयासों ने इस महामारी का खतरा काफी कम किया है। लेकिन इसका प्रसार रोकने के लिए अधिक सख्त नियंत्रण एवं रोकथाम संबंधी उपायों की जरूरत है।'

चीन के वैज्ञानिकों ने वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय को कोरोनावायरस से संबंधित जानकारियां देने में काफी तत्परता दिखाई है। चीन ने 10 जनवरी तक इस वायरस की जीनोम संरचना जारी कर दी थी। इससे फ्लू की तरह लक्षणों वाले मरीजों का फौरन परीक्षण कर कोरोना से संक्रमित होने के बारे में पता लगाया जा सकता है। लेकिन जीनोम संरचना तैयार करना इस वायरस की वैक्सीन तैयार करने की दिशा में महज पहला कदम है। विभिन्न मरीजों से लिए गए नमूनों के आधार पर यह जीनोम तैयार हुआ है। वैसे शुरुआती दौर के मरीजों के जीनोम की तुलना बाद में मिले जीनोम से कर इस वायरस में आए बदलाव को परखा जा सकता है। जीन उत्परिवर्तन की दर बता सकती है कि यह वायरस कब तक 'वाइल्ड' रहा है और इसकी शुरुआत कहां हुई? वुहान वायरस का जीनोम 29,093 बेस लंबा और बहुत हाल की उत्पत्ति है। वैज्ञानिकों के मुताबिक इस वायरस की उत्पत्ति चमगादड़ों में होने की संभावना है और उनसे यह दूसरे जानवरों तक फैला। वुहान में इन जानवरों का सेवन आम होने से इंसान भी उससे संक्रमित हो गए। इंसान में मिले इस वायरस का संस्करण 30 अक्टूबर के बाद और 29 नवंबर के पहले का होने का अनुमान है।

जहां तक भारत का सवाल है यहां कोरोना जैसे वायरस खुद नहीं पनप सकते। यहां केलोगों की मांसाहार की प्रवृति चीन से बिल्कुल अलग है। दक्षिण एशिया के कई देशों में विभिन्न प्रकार के जीवों को मार कर खाने की आदत है। चूहे, मेढक और कुछ ऐसे जीव भी जिन्हें हम भारतीय वर्जित मानते हैं। इन देशों में एक और खतरनाक आदत है कि वो ज्यादतर भोजन को अधपका ही खाते हैं उनका मानना है कि ऐसा अधपका भोजन ज्यादा पौष्टिक होता है और ज्यादा पका देने से उसकी पौष्टिकता नष्ट हो जाती है। हकीकत में ऐसे अधपके मांसाहारी भोजन में खतरनाक बैक्ट्रिया या वायरस जीवित रह जाते हैं जो मनुष्य के लिये मौत का कारण बन जाते हैं। चीन सरीखे देशों में श्ह घातक प्रवृति पहले भी संकट ला चुकी है। सार्स का प्रकोप भी इसी का नतीजा था। अतीत में प्लेग से लेकर कई महामारियों के फैलाव में चीन का हाथ रहा हैभारत में धार्मिक मान्यताओं के कारण भी लोग मांसाहार से दूर रहते हैं। यह चीज अंततः भारतीयों के स्वास्थ्य के लिये अच्छा ही है।

बीते दशक में जेनेटिक शोध में हुए तीव्र विकास ने क्रिस्पर जैसे नए उपकरणों को जन्म दिया है। सवाल है कि दुनिया एक नई बीमारी पर काबू पाने और इलाज ढूंढ पाने के लिए कितनी अच्छी तरह तैयार है? नॉवेल कोरोनावायरस इस तैयारी को परखने का एक मौका है।

9/11 का गुबार आज भी अमेरिकियों को मार रहा है

मुरलीधर

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के धराशायी होने से जो धूल का गुबार उठा, वो विषैले तत्वों से भरा था। उसकी चपेट में आए लोग आज गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं।

11 सितंबर 2001 को न्यूयॉर्क के मैनहट्टन में जब वर्ल्ड ट्रेंड सेंटर के दोनों टावर गिरे तो धूल का बड़ा गुबार छा गया। यह गुबार कई हफ्तों तक मौजूद रहा। जिन लोगों ने इस गुबार में सांस ली, वे आज कैंसर और अन्य खतरनाक बीमारियों से जूझ रहे हैं।

उस घटना के समय 26 साल की जैक्लिन फेब्रिलेट न्यूयॉर्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के पास ही थीं। जैक्लिन का दफ्तर वर्ल्ड ट्रेंड सेंटर से दो ब्लॉक पीछे था। जिस वक्त आतंकवादियों ने दोनों पैसेंजर विमानों को टावरों से भिड़ाया, उस वक्त जैक्लिन दफ्तर में काम कर रहीं थीं। जैक्लिन की जिंदगी उस हमले की यादों के साथ आगे बढ़ती रही। वक्त गुजरने के साथ जैक्लिन तीन बच्चों की मां भी बन गईं। 2016 में जैक्लिन को पता चला कि उन्हें मेटास्टैटिक कैंसर है। ऐसा कैंसर जो शायद 9/11 के हमले के बाद एक महीने तक रहे धूल के गुबार से हुआ। जैक्लिन कहती हैं, "9/11 के दिन मैं वहीं थी। उसके कई साल बाद भी मैं वहीं काम करती रही। हमसे किसी ने नहीं कहा कि ऐसा भी हो सकता है।"

आतंकी हमलों के वक्त 19 साल का रिचर्ड फारर घटनास्थल के आस पास मौजूद नहीं था। लेकिन हमलों के बाद 2001 से 2003 के बीच रिचर्ड ने नियमित रूप से दक्षिणी मैनहट्टन के उस इलाके का सर्वे किया जहां ट्विन टावर गिरे थे। डेढ़ साल पहले रिचर्ड को भी आक्रामक कोलोन कैंसर का पता चला। 37 के रिचर्ड अब दो बच्चों के पिता हैं। शुरुआत में उन्हें समझ ही नहीं आया कि आम तौर पर बुढ़ापे में होने वाले इस कैंसर की जद में वह कैसे आए। उनके परिवार में भी किसी को कैंसर नहीं था। रिचर्ड फारर के कैंसर के तार भी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की विषैली धूल से जुड़े हैं। वर्ल्ड ट्रेंड सेंटर के दो टावरों पर हुए हमले में करीब 3,000 लोगों की मौत हुई। लेकिन जैक्लिन और रिचर्ड उन लोगों में नहीं थे, जिन्होंने राहत और बचाव का काम किया हो या मलबा हटाया हो। हमले की 18वीं बरसी के मौके पर न्यूयॉर्क शहर उन लोगों की बढ़ती संख्या भी देख रहा है जो कैंसर या दूसरे किस्म की गंभीर बीमारियों का शिकार हुए हैं। ये सब धूल के उस गुबार की चपेट में आए जो कई हफ्तों तक मैनहैट्टन के ऊपर छाया रहा।

भरभरा कर ढहते ट्विन टावरों ने हवा में भारी मात्रा में डायोक्सीन, एस्बेस्टस और कैरासिनोजेनिक जैसे विषाक्त तत्व छोड़े। दमकल कर्मी और राहत और बचाव कार्य में लगे स्वयंसेवी इन विषैले तत्वों का सबसे पहला शिकार बने। महीनों तक चले साफ सफाई के काम में जुटे लोगों को कैंसर और दिल संबंधी बीमारियां बहुत ज्यादा हुईं। वर्ल्ड ट्रेड हेल्थ प्रोग्राम के तहत हुई जांचों में हजारों लोगों में कैंसर का पता चला। जून 2019 तक इस प्रोग्राम में हिस्सा लेने वालों की संख्या 21,000 हो गई। इनमें से 4,000 को कैंसर है। ज्यादातर मामलों में प्रोस्टेट, ब्रेस्ट और स्किन कैंसर।

जैक्लिन और रिचर्ड को लगता है कि प्रशासन ने कैंसर के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए या उन्हें इस बीमारी से बचाने के लिए बहुत ज्यादा काम नहीं किया। रिचर्ड कहते हैं, "मेरी पत्नी पूछती है क्या आतंकवादी तुम्हारे कैंसर के लिए जिम्मेदार हैं। मैं 100 फीसदी नहीं कह सकता, लेकिन मैं यह जरूर कह सकता हूं कि त्रासदी वाले इलाके में जाने वाले स्वस्थ्य व्यस्कों के जोखिम को कम करने के लिए बेहतर प्रयास किए जा सकते थे।

कई हफ्ते तक फैले गुबार में विषैले रसायन मौजूद थे

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक कैंसर के लिए किसी एक कारक को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। लेकिन यह बात तय है कि विषैले मलबे के संपर्क में आए लोगों और कैंसर की दर में साफ संबंध है। न्यूयॉर्क फायर डिपार्टमेंट के चीफ मेडिकल अफसर डेविड प्रजैंट कहते के मुताबिक कई शोधों में यह साबित हो गया है कि धूल के गुबार की चपेट में आए लोगों में कैंसर की संभावना "10 से 30 फीसदी ज्यादा" पाई गई। जैसे जैस लोग उम्रदराज होंगे वैसे वैसे कैंसर का जोखिम और बढ़ेगा। प्रजैंट कहते हैं कि फेफड़ों के कैंसर को पनपने में 20 से 30 साल का समय लगता है।

जुलाई 2019 में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने ऐसे पीड़ितों के लिए मुआवजे का दावा करने के लिए समयसीमा दिसंबर 2020 से बढ़ाकर 2090 कर दी। मुआवजा फंड का प्रारंभिक बजट 7.3 अरब डॉलर है, इसके खत्म होते ही फंड में और रकम डाली जाएगी। हर पीड़ित के लिए औसत मुआवजा 2,40,000 डॉलर है। मृतक के परिवार को 6,82,000 डॉलर का हर्जाना दिए जाने का प्रावधान है।

फॉस्फोरस वाली झीलों में जनमा था जीवन

मुकुल व्यास

पृथ्वी पर जीवन के प्रारंभिक संकेत उन झीलों में उत्पन्न हुए थे जहां फॉस्फोरस की अधिक मात्रा थी और इस रसायन की अधिकता इन झीलों में मौजूद कार्बन की वजह से थी। यह नतीजा वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के रिसर्चरों ने अपनी हालिया स्टडी में निकाला है। इसके लिए इन वैज्ञानिकों ने कैलिफॉर्निया की मोनो लेक और भारत की लोनार झील समेत उन तमाम झीलों से नमूने एकत्र किए, जहां कार्बन की मात्रा अधिक थी।

जीवन के लिए फॉस्फोरस आवश्यक है। यह जीवन के छह अनिवार्य रसायनों में एक है। यह डीएनए और आरएनए मॉलिक्यूल्स की रीढ़ की हड्डी है, लेकिन यह तत्व बहुत मुश्किल से मिलता है। इसी वजह से वैज्ञानिक पिछले पचास वर्षों से इस बात को लेकर माथापच्ची कर रहे हैं कि पृथ्वी पर जीवन उत्पन्न करने के लिए समुचित फॉस्फोरस कहां से आया? नए अध्ययन में दावा किया गया है कि कार्बन बहुल झीलों में फॉस्फोरस के उच्च स्तर ने फॉस्फेट के मॉलिक्यूल्स को दूसरे रसायनों के साथ बिना जुड़े रहने दिया। इस स्थिति में हुई रासायनिक क्रियाओं में डीएनए और आरएनए के शुरुआती गुच्छे पैदा हुए। अपने अध्ययन के लिए रिसर्चरों ने उन झीलों पर ध्यान केंद्रित किया जो शुष्क माहौल में निर्मित होती हैं।

भारत कुशल कर्मचारियों की कमी से जूझ रहा है

चीन जापान कोरिया के सामने हमारे कामगार कहीं नहीं टिकते, भारत में सबसे अधिक कामकाजी आयु के लोग हैं, इसके बाद भी केवल 2.3 प्रतिशत कार्यबल ही औपचारिक रूप से कुशल है, जबकि चीन में यह औसत 40 फीसदी है और जापान में तो चाइना से दोगुना यानि 80 फीसदी कार्यबल कुशल है। भारत में बहुत कम कार्यबल के कुशल होने की सबसे बड़ी वजह कार्यस्थलों पर सीखने की संस्कृति को बढ़ावा नहीं देना है। नॉसकाम द्वारा जारी रिपोर्ट में यह बात सामने आई है। रिपोर्ट में जोर दिया गया है कि आज कंपनियों को सफलता के लिए कार्यबल को उचित प्रशिक्षण और काम के प्रति प्रोत्साहित करने की तरफ गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है।

तिब्बत के ग्लेशियर में मिला 15,000 साल पुराना वायरस

कोल्ड स्प्रिंग हार्बर लेबॉरेटरी से संचालित बायो आर्काइव डाटाबेस में वैज्ञानिकों को ग्लेशियर से प्राचीन वायरस मिला है। शोधकर्ताओं के मुताबिक यह वायरस हजारों साल पहले की बीमारियों को वापस ला सकते हैं।

सन 2015 में वैज्ञानिकों की टीम अमेरिका से तिब्बत यह पता लगाने पहुंची थी कि वहां ग्लेशियर के अंदर क्या है। उनके अध्ययन में चीन के उत्तर-पश्चिम तिब्बती पठार पर विशाल ग्लेशियर में 15 हजार साल से फंसे ऐसे वायरस को खोजा गया है जिनको पहले कभी नहीं देखा गया है। कोल्ड स्प्रिंग हार्बर लेबॉरेटरी से संचालित बायो आर्काइव डाटाबेस में प्रकाशित शोध में बताया गया है कि कैसे शोधकर्ताओं ने 28 ऐसे वायरस समूहों की खोज की है जिनको पहले कभी नहीं देखा गया। शोधकर्ताओं के मुताबिक बर्फ में दबे होने की वजह से यह वायरस अलग अलग तरह की जलवायु में भी जीवित रहे हैं।

शोधकर्ताओं ने यह चेतावनी दी है कि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया भर के पिघलते ग्लेशियरों के कारण इस तरह के वायरसों का दुनिया में फैलने का खतरा पैदा हो गया है। बर्फ में दबे होने की वजह से यह वायरस हजारों साल से जिंदा हैं, लेकिन बाहर नहीं आ पाए। वैज्ञानिकों के मुताबिक ऐसे वायरस का दुनिया के संपर्क में आना खतरनाक साबित हो सकता है।

शोधकर्ताओं ने यह चेतावनी दी है कि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया भर के पिघलते ग्लेशियरों के कारण इस तरह के वायरसों का दुनिया में फैलने का खतरा पैदा हो गया है। बर्फ में दबे होने की वजह से यह वायरस हजारों साल से जिंदा हैं, लेकिन बाहर नहीं आ पाए। वैज्ञानिकों के मुताबिक ऐसे वायरस का दुनिया के संपर्क में आना खतरनाक साबित हो सकता है। अध्ययन में शोधकर्ताओं ने ग्लेशियर के दो नमूनों का अध्ययन किया। एक ग्लेशियर का टुकड़ा 1992 में लिया गया था और दूसरा 2015 में। दोनों नमूनों को ठंडे कमरे में रखा गया था। एक की बाहरी परत को हटाने के लिए इथेनॉल का इस्तेमाल किया गया, जबकि दूसरे को साफ पानी से धोया गया। दोनों ही नमूनों में 15 हजार साल पुराने वायरस पाए गए। दुनिया के कई शोधकर्ता पहले से जलवायु परिवर्तन पर चिंता जता चुके हैं। जिनके मुताबिक ग्लेशियरों में कई ऐसे वायरस दबे हो सकते हैं जो बीमारियां पैदा कर सकते हैं। यह ऐसे वायरस हैं जिनसे निपटने के लिए आधुनिक दुनिया तैयार नहीं है। अगर यह वायरस बाहरी दुनिया में संपर्क में आते हैं तो वे फिर से सक्रिय हो सकते हैं। शोधकर्ताओं की टीम ने ग्लेशियर के कोर तक जाने के तिब्बत के ग्लेशियर पठारों को 50 मीटर (164 फीट) गहराई तक ड्रिल किया। शोधकर्ताओं ने नमूनों में रोगाणुओं की पहचान के लिए माइक्रोबायोलॉजी तकनीकों का इस्तेमाल किया। प्रयोग में 33 वायरस समूहों का पता चला, जिनमें 28 प्राचीन किस्म के वायरस थे।

कोल्ड स्प्रिंग लैब के जर्नल 'बायोआर्काइव' में शोधकर्ताओं ने लिखा, "ग्लेशियर की बर्फ के अध्ययन के लिए अल्ट्रा क्लीन माइक्रोबियल और वायरल सैंपलिंग प्रक्रियाओं को स्थापित किया गया। वायरस की पहचान करने के लिए साफ प्रक्रिया है।अंटार्कटिका में ग्लेशियर असामान्य रूप से तेजी से पिघल रहे हैं। जनवरी 2019 में शोधकर्ताओं ने उल्लेख किया कि इस क्षेत्र में बर्फ 1980 के दशक की तुलना में छह गुना अधिक तेजी से पिघल रही है। जिसमें ऐसे क्षेत्र भी शामिल हैं जिन्हें अपेक्षाकृत स्थिर और परिवर्तन के लिए प्रतिरोधी माना जाता रहा है।

शोधकर्ताओं ने लिखा है कि जलवायु परिवर्तन की वजह से अब हमें खतरनाक वायरस का खतरा पैदा हो गया है। एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि आर्कटिक में समुद्री बर्फ प्रत्येक गर्मियों में सितंबर में पूरी तरह से गायब हो सकती है। अगर वैश्विक तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होती है, पर्यावरण की स्थिति और खराब होती तो ग्लेशियरों में दबे ये वायरस बर्फ से निकल कर दुनिया में घातक आतंक मचा सकते हैं।

रेलवे : आशीष कुमार झा ,महादेव कच्छप को इंप्लोई ऑफ द मंथ सम्मान

रांची : परिचालन विभाग में कार्यरत आशीष कुमार झा स्टेशन अधीक्षक, रामगढ़ कैंट रेलवे स्टेशन के एक कर्मठ और समर्पित कर्मचारी हैं दिनांक 01.11.2019 को 08 बजे से 16 बजे की शिफ्ट मे कार्य कर रहे आशीष झा ने सतर्कता से दुर्घटना को टाल दिया। वहीं परिचालन विभाग में कार्यरत महादेव कच्छप पॉ-इंट्स मैन नेदुर्घटना की आशंका देख तुरंत शंटिंग रोक दी एवं इसकी सूचना यार्ड मास्टर को दी।महादेव कच्छप की सतर्कता ने एक दुर्घटना को टाल दिया।इन उत्कृष्ट कार्यों के लिए दोनों कर्मचारियों को दिनांक 04.02.2020 को मंडल रेल प्रबंधक रांची नीरज अम्बष्ठ ने ''इंप्लाइ ऑफ द मंथ'' के पुरस्कार से पुरस्कृत किया।

सामाजिक शैक्षणिक संस्था एचिभर्स क्लासेज का शुभ उद्घाटन

रांची : एक्सिलैंट पब्लिक स्कूल एवं छात्र क्लब ग्रुप के सामाजिक दायित्व के तहत संचालित प्रोजेक्ट शैक्षणिक संस्था एचिवर्स कार्यालय का शुभ उद्घाटन दिनांक 09.02.2020 को रातू, काठी टाँड़ नारायणी स्वीट्स के निकट मुख्य अतिथि काँके विधायक समरी लाल, कल्चुरी जायसवाल संबर्गीय महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शकुन्तला जायसवाल, छात्र क्लब ग्रुप के संस्थापक अध्यक्षक शिव किशोर शर्मा, सेंटर के प्रबंध निदेशक कार्त्तिक विश्वकर्मा, हटिया विधायक नवीन जायसवाल, वरिष्ठ भाजपा नेता सोमनाथ पाण्डेय ने संयुक्त रूप से फीता काटकर एवं नारियल फोड़कर किया। संस्था के निदेशक कार्त्तिक विश्वकर्मा ने कहा एचिभर्स क्लासेज सामाजिक शैक्षणिक संस्था है, जिसमें रेलवे, स्पोकेन इंग्लिश, बैंकिंग, कम्प्यूटर आदि कोर्स की प्रशिक्षण विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा दी जायेगी।

बाबा विश्वनाथ का दर्शन और गंगा आरती में शामिल होकर धन्य हुआ

संवाददाता

रांची :महादेव से मांगना क्या, सब उनका दिया हुआ है बस उसे बेहतर ढंग से संभालना है। ये बाते मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अपनी वाराणसी यात्रा पर कही। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा विश्वनाथ सभी को अपनी कृपा से सिंचित करें। बाबा विश्वनाथ का दर्शन और गंगा आरती में शामिल होकर धन्य हुआ। एक अद्भुत खुशी की अनुभूति हुई। यह सब महसूस कर अभिभूत हुआ। मैं पहले भी देवाधिदेव महादेव का दर्शन करने आता रहा हूं। यह जुड़ाव बना रहेगा। ये बातें मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने वाराणासी स्थित बाबा विश्वनाथ मंदिर परिसर में संवाददाताओं से बातचीत के क्रम में कही।

महादेव से मांगना क्या सब उनका ही दिया हुआ है।मुख्यमंत्री ने कहा कि महादेव से मांगना क्या। सब उनका ही दिया हुआ है। बस उसे बेहतर ढंग से संभालना है। भगवान से आशीर्वाद के लिए याचना करने आया हूँ। मुख्यमंत्री ने कहा कि गंगा नदी झारखण्ड से होकर भी गुजरती है।

यह गौरव की बात है। हमें हाल के वर्षों में जलवायु में हो रहे परिवर्तन से मिलकर निपटना होगा । ताकि प्रकृति का संरक्षण और संवर्धन हो सके। परिस्थितियों के अनुरूप कार्य होगा मुख्यमंत्री ने कहा झारखण्ड में नई सरकार का गठन हुए चंद दिन ही हुए हैं। वहां आधिकारिक रूप से जैसे जैसे चीजें आएंगी। उसे समझते हुए कार्य किया जायेगा।

पदयात्रा के माध्यम से वातावरण और ईंधन संरक्षण का दिया संदेश

रांची : गेल इंडिया लिमिटेड के तत्वावधान में सक्षम फिट अभियान का आयोजन रांची के श्री जगन्नाथ एचईसी मैदान से 9 फरवरी किया गया। कंपनी के पूर्वी क्षेत्र के कार्यपालक निदेशक केबी सिंह ने इसका शुभारंभ किया। इसमें 1,200 से अधिक प्रतिभागियों ने धुर्वा गोलचक्कर तक लगभग 3 किलोमीटर की पदयात्रा में भाग लिया। पदयात्रा को गेल इंडिया लिमिटेड द्वारा 'सक्षम 2020 अभियान' के तहत आयोजित किया गया था। यह अभियान पीसीआरए द्वारा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय भारत सरकार के तत्वावधान में हुआ।

पदयात्रा में शामिल बच्चों ने विभिन्न स्लोगन के माध्यम से ईंधन की बचत करने का संदेश लोगों को दिया।पदयात्रा का उद्देश्य लोगों के में इंधन संरक्षण के लिए जागरुकता पैदा करना है। छोटी दूरी के लिए पदयात्रा करना ना केवल इंधन के बचत का स्त्रोत है, बल्कि इससे वातावरण भी सुरक्षित रहता है।

मशरुम उत्पादन बना ग्रामीण पोषण सुरक्षा और रोजगार का साधन

.....पेज 1 का शेष

रांची जिले के ठाकुरगाँव के जय कुमार ने विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण लेने के बाद आस -पास के गाँवों के 25 महिला - पुरूष को मशरुम की खेती से जोड़ा है. उन्होंने गाँव में 10 लोगों का समुह बनाकर माँ अम्बे सेवा संस्थान बनाई और मशरुम का उत्पादन शुरू किया. जय कुमार है कि संस्थान का पूरे उत्पाद का गाँव में खपत हो जाता है. प्रोटीन युक्त स्वादिस्ट आहार की वजह से गाँव के लोग मशरुम की सब्जी को खाना पसंद करने लगे हैं. आस -पास के गाँवों के लोंगो से समन्वय बनाकर मशरुम की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे है ।लातेहार जिले के बालूमाथ गाँव के नीरज कुमार ने बीएयू से प्रशिक्षण लेने के बाद 5 लोंगो के साथ मिलकर मशरुम का उत्पादन करना शुरू किया. उनका कहना है कि 70 - 80 दिनों के मेहनत से ही मशरुम की खेती में लाभ ही लाभ है. इसके उत्पादों को स्थानीय हाट में बेचते है और बचे मशरुम को सुखाकर बेचते है, जिसका उन्हें अधिक मूल्य मिल जाता है. सुखा मशरुम को ग्रामीण गेहूं में मिलाकर आटे में उपयोग में लाते है. इस पोष्टिक आटे की रोटी को लोग पसंद करने लगे है.

गाँव में इसकी मांग बढ़ रही है.

शेखपुरा, बिहार के प्रभाकर कुमार ने बीएयू में मशरुम स्पाँन (बीज) उत्पादन का 15 दिवसीय प्रशिक्षण लेकर खूँटी जिले के हुटार में मशरुम स्पाँन उत्पादन की ईकाई की स्थापना करने जा रहे है. हुटार एवं बगल गाँव के लोग खासकर महिलाएँ इस व्यवसाय से जुड़ना चाह रहे है. ग्रामीण स्तर पर गुणवत्ता युक्त मशरुम बीज उपलब्ध नहीं होने से मशरुम की खेती नहीं कर पा रहे है. इस मांग को देखते हुए प्रतिदिन 200 - 300 किलों मशरुम बीज उत्पादन करने की उन्होंने योजना बनाई है. ताकि हुटार एवं बगल गाँवों में मशरूम की खेती को बढ़ावा मिले . नीरज एक विज्ञान स्नातक है और उन्होंने ड्रिप सिंचाई से खेती एवं बागवानी को स्वरोजगार का साधन बनाया है.

बीएयू के मशरुम उत्पादन इकाई प्रभारी डॉ नरेंद्र कुदादा बताते है कि बढ़िया स्वाद, पौष्टिक गुणों तथा सस्ता प्रोटीन श्रोत होने से मशरुम को ग्रामीण इलाकों में पसंद किया जाने लगा है. कम जगह और थोड़े लागत से मशरुम की खेती में अधिक से अधिक लाभ लिया जा सकता है. थोड़े मेहनत से ही 70 - 80 दिनों के मशरुम का उत्पादन होने लगता है. मशरुम बीज उपलब्ध होने पर स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों से ही इसका आसानी से उत्पादन किया जाना संभव है. इसकी खेती को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण एवं आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित किया जा सकता है. विभिन्न फसलों के कृषि-अवशेषों से मशरुम की खेती आसानी से की जा सकती है. किसान, मशरुम की खेती को अपनी सामान्य खेती के साथ - साथ दो फसलों के बीच मिलने वाले समय के दौरान, अतिरिक्त आय के साधन के रुप में कर सकते हैं. गाँव के बेरोजगार युवक- युवतियों तथा घरेलु महिलाओं के लिए यह स्वरोजगार एवं स्वावलम्बी का बेहतर अवसर प्रदान करती है।

कल्याण, खान सुरक्षा के साथ कोयला उत्पादन के लिए कटिबद्ध कोल इंडिया: प्रमोद अग्रवाल

कोल इंडिया अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल का सीसीएल दौरा

संवाददाता

रांची : सीसीएल मुख्यालय दरंभगा हाउस कन्वेंशन हॉल स्थित ''ऑडिटोरियम'' में कोल इंडिया के अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल का सीसीएल कर्मियों ने स्वागत किया। इस अवसर पर सी.सी.एल. के सीएमडी गोपाल सिंह एवं कोल इंडिया के निदेशक (तकनीक) विनय दयाल, निदेशक तकनीकी (संचालन) वी.के. श्रीवास्तव, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) भोला सिंह, निदेशक (वित्त) एन.के. अग्रवाल, निदेशक (कार्मिक) विनय रंजन, सीवीओ, ए.के. श्रीवास्तव, महाप्रबंधक/अध्यक्ष के तकनीकी सचिव एम.के. सिंह एवं क्षेत्रीय महाप्रबंधक सहित मुख्यालय के महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष, श्रमिक संघ के प्रतिनिधिगण सहित कर्मी उपस्थित थे। इससे पूर्व श्री अग्रवाल ने मुख्यालय स्थित शहीद स्मारक पर जाकर पुष्पांजलि अर्पित कर दिवंगत कोयला कर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। अवसर विशेष पर कोल इंडिया के अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल ने अपने स्वागत के लिए आभार व्यक्त करते हुये कहा कि कंपनी के हित के साथ-साथ राष्ट्र हित सर्वोपरि है एवं कंपनी के प्रत्येक कर्मी का इसमें महत्वपूर्ण योगदान है । हमारा उद्देश्य है कि देश में कहीं भी कोयले की कमी नहीं हो । साथ ही उन्होंने कहा कि कोयला उत्पादन के साथ-साथ कंपनी के कल्याण एवं खान सुरक्षा महत्वपूर्ण है और इसके लिए कोल इंडिया पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि अब मैं कोयला परिवार का एक स्थायी सदस्य बन गया हूँ और मैं पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा से परिवार के विकास के लिए कार्य करूंगा। सीएमडी गोपाल सिंह ने सी.सी.एल. कर्मियों तथा सी.सी.एल. वृहद परिवार की ओर से अध्यक्ष, कोल इंडिया प्रमोद अग्रवाल का स्वागत किया तथा सीसीएल में सीएसआर के अंतर्गत चल रहे विभिन्न कल्याणकारी योजनओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि सीसीएल वित्तीय वर्ष 2012-13 में जहॉ 48 मिलियन टन कोयला उत्पादन से आगे नहीं बढ़ पा रहा था और आज उसी संसाधन एवं श्रम शक्ति के साथ लगभग 70 मिलियन टन कोयला उत्पादन कर रहा है।

दक्षिण पूर्व रेलवे महिला हॉकी टीम उपविजेता

रांची :दिनांक 31.01.2020 से दिनांक 05.02.2020 तक रेल कोच फैक्ट्री कपूरथला स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा भारतीय रेल महिला हॉकी लीग वर्ष 2019-20 का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय रेल के कुल 8 टीमों ने भाग लिया इन आठ टीमों को दो ग्रुप में बांटा गया था। लीग चरण के बाद फाइनल मैच दक्षिण पूर्व रेलवे महिला हॉकी टीम एवं उत्तर रेलवे की महिला हॉकी टीम के साथ खेला गया जिसमें उत्तर रेलवे की महिला हॉकी टीम ने 2-1 से विजय प्राप्त की । इस लीग में प्रथम स्थान उत्तर रेलवे को प्राप्त हुआ, द्वितीय स्थान दक्षिण पूर्व रेलवे, तृतीय स्थान रेल कोच फैक्ट्री कपूरथला एवं चतुर्थ स्थान मध्य रेलवे को प्राप्त हुआ।

उपरोक्त हॉकी लीग में रेल कोच फैक्ट्री कपूरथला स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा प्रत्येक मैच में बेस्ट प्लेयर, बेस्ट गोलकीपर, बेस्ट डिफेंडर, बेस्ट मिडफील्डर तथा बेस्ट फॉरवर्ड के लिए विशेष पारितोषिक भी दिए गए ।

दक्षिण पूर्व रेलवे को बजट मे विविध कार्यों के लिए राशि आवंटित की गई

रांची/कोलकाता :भारतीय रेल मे आर्थिक योगदान के लिए दक्षिण पूर्व रेलवे एक महत्वपूर्ण जोन है । दक्षिण पूर्व रेलवे मे आधारिक संरचना का विकास तथा कार्यरत प्रोजेक्ट एवं अन्य कार्यों के लिए कुल राशि 5401 करोड़ रूपए 2020-2021 के बजट मे आवंटित की गयी है` वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए निम्न अनुसार कार्यों के लिए राशि आवंटित की गयी है।

1. दोहरीकरण परियोजना के लिए कुल 993.00 करोड़ रूपये की स्वीकृति ।
2. सडक यातायात सुरक्षा को ध्यान मे रखते हुए रेलवे क्रासिंग के लिए 42.86 करोड़ रूपये की स्वीकृति ।
3. रोड ओवर ब्रिज तथा रोड अंडर ब्रिज निर्माण के लिए 248.59 करोड़ रूपये की स्वीकृति ।
4. रेल पटरी की नवीनीकरण के लिए 840 करोड़ रूपय की स्वीकृति
5. पुल कार्यों के लिए 33 करोड़ रूपये की स्वीकृति ।
6. यात्री सुविधाओं के लिए 151.83 करोड़ रूपय की स्वीकृति।
7. कर्मचारी कल्याण हेतु 39.29 करोड़ रूपये की स्वीकृति ।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त दक्षिण पूर्व रेलवे पर बेहतर संपर्क स्थापित करने हेतु तथा सहज यातायात के लिए निम्नलिखित नए कार्यों के लिए राशि की स्वीकृति ।

1. किरीबुरू - बड़बिल के बीच 24.5किमी नयी रेल लाइन का निर्माण अनुमानित राशि 705.17 करोड़ रूपये।
2. भोजुडीह - तालगड़िया के बीच 12.5 किमी दोहरीकरण कार्य के लिए अनुमानित मूल्य 129 करोड़ रूपय
3. मुरी - बरकाकाना के बीच 58किमी दोहरीकरण कार्य के लिए अनुमनत राशि 580 करोड़ रूपय
4. राउरकेला - बंडामुंडा ऐ केबिन के बीच 10 किमी पांचवी लाइन के लिए अनुमानित राशि 169.65 करोड़ रूपये।

16 मास्टर ट्रेनरों और प्रशिक्षकों को मिला सम्मान

संवाददाता

- प्रोजेक्ट पवित्र के दूसरे चरण के सफलता पूर्ण संचालन के लिए मिला सम्मान
- उपायुक्त, रांची ने किया सम्मानित
- प्रोजेक्ट के तहत छात्राओं को मासिक धर्म स्वच्छता की दी गई जानकारी

रांची :जिले के 44 सरकारी स्कूलों में 15 हज़ार किशोरियों को किया गया प्रशिक्षित।प्रोजेक्ट पवित्र के दूसरे चरण के सफलतापूर्वक संचालन के लिए मास्टर ट्रेनरों और प्रशिक्षकों को सम्मानित किया गया। उपायुक्त, रांची श्री राय महिमापत रे ने 16 मास्टर ट्रेनरों और प्रशिक्षकों को सम्मानित किया रांची जिला प्रशासन और आर्ट ऑफ लिविंग की ओर से प्रोजेक्ट पवित्र कार्यक्रम के तहत छात्राओं को मासिक धर्म स्वच्छता पर विभिन्न स्कूलों में कार्यक्रम आयोजित कर स्वास्थ्य शिक्षा दी गई। कार्यक्रम के दौरान आर्ट ऑफ लिविंग के कुशल प्रशिक्षकों द्वारा छात्राओं को मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में बताया गया। साथ ही माहवारी के दौरान योगाभ्यास की जानकारी भी दी गई। छात्राओं को बताया गया कि मासिक धर्म के दौरान रूढ़ीवादी सोच से हटकर हाइजीन पर ध्यान दें।प्रोजेक्ट पवित्र के दूसरे चरण के दौरान रांची के 44 सरकारी स्कूलों में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन पर जागरूकता सत्र चलाया गया। इस दौरान 15000 किशोरियों को प्रशिक्षित किया गया।

महाशिवरात्रि महोत्सव हेतु बैठक

रांची :प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री सर्वेश्वर महादेव शिव बारात आयोजन समिति, देवी मण्डप रोड, हेसल, राँची के तत्वावधान में शिवरात्रि महोत्सव धुम-धाम से मनायी जायेगी। इस महोत्सव की सफलता के लिए महाशिवरात्रि महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष नीरज कुमार ने एक महत्वपूर्ण बैठक आज दिनांक 06.02.2020 को श्री सर्वेश्वर महादेव मंदिर परिसर, हेसल में बुलाई, जिसमें निर्णय ली गई 21 फरवरी 2020 के प्रातः महारूद्रजभिषेक, दोपहर में महाप्रसाद वितरण एवं शिव बारात शोभायात्रा सह जीवन्त झांकी एवं रात्रि में भजन कीर्तन एवं शिव विवाह का आयोजन होगा। इस बैठक में पूष्पा देवी, अनिता देवी, इन्दू वर्मा, रूबी श्रीवास्तव, अंजना प्रियदर्शनी, रश्मि सिंह, रिंकी सिंह, अंजली सिन्हा, वीणा सिन्हा, शोभा देवी, प्रतिभा देवी, शीला देवी, रजनी रंजन, आभा देवी, लीला देवी, रागिणी देवी, सुमन तिवारी, जयमाला देवी, गुंजा सिंह, मधु देवी, चन्द्रकान्ता देवी, आदि-आदि उपस्थित थे। यह जानकारी शिव किशोर शर्मा ने दिया।

डीडीसी रांची की अध्यक्षता में रूरबन मिशन की डीएलसी बैठक

संवाददाता

- मुड़मा जात्रा स्थल और अखड़ा का परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के रूप में होगा नवीकरण
- तालाब किनारे चिल्ड्रन पार्क के विकास के लिए इंजीनियर और बीडीओ करेंगे दौरा
- सैनिटरी नैपकिन, सैनिटरी नैपकिन पैकेजिंग, एलईडी बल्ब असेंबलिंग यूनिट, पेपर बैग और टिशू पेपर यूनिट का होगा विकास

रांची :डीडीसी रांची अनन्य मित्तल ने मंगलवार को विकास भवन सम्मेलन हॉल रांची में श्यामाप्रसाद मुखर्जी राष्ट्रीय रुर्बन मिशन की डीएलसी बैठक बुलाई। बैठक के दौरान रांची के मांडर ब्लॉक के अंतर्गत ब्राम्बे रुर्बन क्लस्टर के लिए योजना बनाई गई एवं परियोजनाओं पर चर्चा की गई। बैठक में पिछले परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा के साथ बैठक शुरू हुई। इसके बाद स्वास्थ्य, डेयरी, इंजीनियरिंग, पशुपालन, JSLPS और अन्य सहित विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारियों के साथ आगे के प्रस्तावों पर चर्चा की गई। प्रारंभ में आर्थिक गतिविधियों से जुड़े कौशल विकास से संबंधित परियोजनाओं पर चर्चा की गई। ब्राम्बे क्लस्टर में 2 एसएचजी के लिए सब्जी नर्सरी का विकास, सैनिटरी नैपकिन, सेनेटरी नैपकिन पैकेजिंग, एलईडी बल्ब असेंबलिंग यूनिट, पेपर बैग और टिश्यू पेपर इकाई, साबुन और डिटर्जेंट बनाने की इकाई, बेकरी और कन्फेक्शनरी इकाई(जिसमें चॉकलेट और मिठाई शामिल हैं) एवं इसके लिए प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था तैयार करने पर विमर्श की गई। अगरबती बनाने की इकाई, पापड़ बनाने की इकाई, नोट बुक बनाने की इकाई, फ्लाई ऐश / ईंट बनाने की इकाई, आरओ मिनरल वाटर प्रोसेसिंग इकाइयों आदि की स्थापना पर चर्चा की गई। इनमें से कई परियोजनाओं को भौतिक उपस्थिति देखने के लिए मंजूरी दी गई है और जल्द ही इनका सेटअप तैयार हो जाएगा।

कृषि सेवा और प्रोसेसिंग के तहत बकरी शेड, बागवानी नर्सरी विकास, कृषि उपकरण बैंक, कोल्ड रूम, आटा चक्की, तेल मिल, मशरूम स्पॉन उत्पादन, खाद्य और खरीद, ब्राम्बे हाट का विकास कार्य चल रहा है। ब्राम्बे पंचायत भवन में 24x7 पीने के पानी की आपूर्ति पर भी काम किया जा रहा है। जल निकासी प्रणाली के साथ इस गांव में पीसीसी सड़क की भी योजना बनाई गई है। कार्यकारी अभियंता से इस संबंध में एस्टीमेट मांगा गया है। RURBAN मिशन के स्वास्थ्य अनुभाग के तहत, एक जेनेरिक मेडिकल स्टोर के साथ मौजूदा अस्पताल के विकास और नवीनीकरण की योजना प्रस्तावित की गई है। सिविल सर्जन कार्यालय को उसी के लिए एक प्रस्ताव तैयार करने और भवन प्रमंडल से एस्टिमेट प्राप्त करने के लिए कहा गया है। इसके अलावा प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के उन्नयन के लिए योजना को मंजूरी दी गई।

केंद्रीय विश्वविद्यालय, ब्राम्बे और मुडमा कंडारी तालाब के पास पर्यटन स्थल के रूप में जल निकायों के पर्यटन विकास पर चर्चा की गई। वॉटर स्पोर्ट डेवलपमेंट के तहत, डीडीसी रांची ने मांडर बीडीओ से इन स्थानों पर पानी के खेल के विकास के स्कोप के बारे में जानकारी ली।

अल्टीमेट पाथ ने किया रक्तदान शिविर आयोजित

रांची : अल्टीमेट पाथ और मनोहार लाल समृति के सयुंक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अल्टीमेट पाथ के लालपुर स्थित संस्थान में शिक्षक और छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस शिविर में 30 लोगों ने रक्तदान किया। संस्था के निदेशक रतनेस रमन जी ने कहा कि समाज में रक्त की कमी की वजह जरुरतमंदो को सही समय पर रक्त नहीं मिल पाता है।अतः युवाओ को आगे बढ़कर स्वेच्छा से रक्तदान करना चाहिए। इस अवसर सुनिधी, रंजय, विवेक, सुनिल, जितेन्देर शर्मा, श्याम कुमार, लव कुश कुमार एवं अन्य बच्चे उपस्थित थे और कायक्रम को सफल बनाया।। यह जानकारी राजीव गुप्ता जी ने दी।

यूपी में गंगा को इकॉनमी से जोड़ने वाली यात्रा

बी. डी. त्रिपाठी

भारत में गंगा की पूजा देवी गंगा मां के रूप में की जाती है। गंगा प्रदूषण से मुक्त, शुद्ध रहे, बाधाओं से मुक्त होकर अविरल बहे और बहती रहे, इसी में भारत का हित है। इस दिशा में भारत सरकार की पहल और प्रयास सराहनीय है। परंतु केवल सरकार का प्रयास काफी नहीं होगा। इसमें गंगा किनारे स्थित पांच राज्यों, सैकड़ों नगरों और तरह-तरह के उद्योगों से जुड़े लोगों की सहभागिता भी आवश्यक है। वैज्ञानिक, जल विज्ञानी, भूगर्भशास्त्री, नीति निर्माता, पर्यावरणविद, धार्मिक प्रमुख, साधु-संत, मल्लाह, कृषक, मजदूर हर किसी को अपने हिस्से का योगदान करना होगा, तभी हम स्वच्छ, निर्मल, प्रदूषणमुक्त अविरल गंगा की कल्पना साकार कर सकते हैं।

इस संदर्भ में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 27 से 31 जनवरी तक राज्य के 26 जनपदों में 5 दिवसीय गंगा यात्रा निकालने की घोषणा की तो एक बात साफ हो गई कि इसके माध्यम से गंगा के तटवर्ती गांवों में रहने वाले लोगों को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाना है। यूपी में चल रही इस यात्रा के जरिए गंगा तट के किनारे स्थित सभी धार्मिक, आध्यात्मिक एवं

सांस्कृतिक केंद्रों को आस्था के साथ ही पर्यटन की गतिविधियों से जोड़ने की कोशिश हो रही है। इससे स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार बढ़ेगा।

गंगा के तटवर्ती क्षेत्रों में श्मशान गृह/घाट का निर्माण कराने के साथ ही गांवों में 07 स्वास्थ्य शिविर लगाए जाएंगे, जिसमें स्वास्थ्य परीक्षण कार्यक्रम तथा आयुष्मान योजना के तहत समुचित इलाज प्रारंभ किया जाएगा। इसके अलावा नगर निकायों में पशु आरोग्य मेले का भी आयोजन होगा। इन कार्यक्रमों के जरिए वे लोग सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से जुड़ेंगे, जो अभी तक वंचित रह गए थे। योजना यह भी है कि नगर निकायों में गंगा तट के किनारे समुचित स्थल को चिह्नित कर 'गंगा पार्क' का विकास किया जाए, जहां लोगों को मॉर्निंग वॉक एवं ओपन जिम की सुविधा उपलब्ध होगी। ग्राम पंचायतों में खेलकूद हेतु 'गंगा मैदान' की व्यवस्था की जाएगी और खेलकूद की विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होगा। इन कार्यों से केंद्र सरकार के 'फिट इंडिया' और 'खेलो इंडिया खेलो' मूवमेंट को संबल मिलेगा। इससे जहां लोग अपने स्वास्थ्य प्रति जागरूक होंगे, वहीं नई प्रतिभाएं भी निकलकर सामने आएंगी। उत्तर प्रदेश में लाखों हेक्टेयर जमीन गंगा के पानी से सिंचित होती है। सामाजिक गतिविधियों के साथ-साथ इसका आर्थिक महत्व भी है। वर्तमान में कई भौतिक कारणों से इसमें प्रदूषण बढ़ा है, जिससे इसकी निर्मलता और अविरलता प्रभावित हुई है। इस समस्या को समग्रता में समझने की आवश्यकता है। गंगा यात्रा इसमें सहायक साबित होगी। इस यात्रा के जरिए प्रदेश सरकार जहां एक तरफ लोगों को गंगा के प्रति जागरूक करेगी, वहीं दूसरी तरफ जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लोगों के द्वार तक पहुंचेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा है कि इस यात्रा के जरिए प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की जाए।

यात्रा के दौरान गंगा नदी के तटवर्ती गांव में कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के तहत गांवों में फलदार वृक्षों को बढ़ावा देने के लिए किसानों को फलदार पौध उपलब्ध कराई जानी है। इसके लिए प्रदेश सरकार गांवों में 'गंगा नर्सरी' की स्थापना के साथ ही, किसानों को 'गंगा उद्यान' के लिए प्रेरित करेगी। जो किसान अपने खेतों में फलदार पौध लगाते हैं उन्हें रख-रखाव हेतु तीन वर्षों के लिए सरकार की तरफ से विशेष अनुदान दिया जाएगा। अच्छे फल वाले पौधे किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में सहायक होंगे। इसके अलावा सरकार मिट्टी के सामानों को बाजार मुहैया कराने के साथ ही उन्हें अपने उत्पादों की अच्छी कीमत दिलाएगी। लोगों को मछली पालन और सिंघाड़े की खेती का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। कुल मिलाकर, 'गंगा-यात्रा' गंगा को आस्था से अर्थव्यवस्था तक ले जाएगी। इससे न केवल गंगा का सांस्कृतिक-आध्यात्मिक पक्ष जन-जन तक पहुंचेगा बल्कि ग्रामीण आर्थिक जीवन में बदलाव भी आएगा।

(लेखक महामना मालवीय गंगा शोध केंद्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के चेयरमैन हैं)

BOOK INDIA
DEALS IN SCHOOL BOOKS & STATIONARY
BRANDED BOOK REASONABLE PRICE
LEADING PUBLISHERS
- Top High Quality Books
- C.B.S.E., NCERT,ICSE & JAC Board
- 365 Days Services

SPECIALIST IN Pvt. School Books/Play School Books/Childrens Books

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पुस्तकें उपलब्ध

Sahay Compound, St. Anne's Girls School Lane, Tharpakhna, Ranchi Ph. : 9199365691,7050112727,0651-6522703

फोटो न्यूज

सिन्दूर का पेड़: पाठकों ये सिन्दूर का पेड़ है जो दिनदयाल नगर के आफिसर्स क्लब के बगीचे में है। वास्तविक नारंगी पीपा सिन्दूर इसी पेड़ के फल के बीज से बनता है। बाकी सिन्दूर तो नकली हानिकारक रासायन हैं जो महिलाओं के स्किन को खराब करते हैं।

बिहार में नीलगायों का होगा संहार

जबकि महज बीस रूपये की दवा से नीलगायों को खेत से दूर रखा जा सकता है

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में 3000 से अधिक नील गायों को मारने की तैयारी स्थानीय प्रशासन द्वारा की गयी है। इसके लिए तमिलनाडु से शार्प शूटर को भी बुलाया गया है। नील गायों को मारने का यह अभियान 23 जनवरी से ही शुरू होना था, मगर शूटर असगर अली की तबीयत खराब होने की वजह से यह अभियान फिलहाल शुरू नहीं हो पाया है। हालांकि नील गायों की सामूहिक हत्या के इस सरकारी अभियान का केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी की संस्था पीपल्स फॉर एनीमल ने विरोध किया है और सरकार को पत्र लिखकर वैकल्पिक उपाय अपनाने को कहा है। मगर सरकार का पक्ष है कि किसानों को होने वाले भारी नुकसान की वजह से यह आखिरी उपाय अपनाने को मजबूर होना पड़ा है। लेकिन दिलचस्प है कि ऐसी ही परिस्थितियों का सामना कर रहे भोजपुर जिले के किसान 20 रुपए में मिलने वाली वेस्ट डिकंपोजर दवा से नील गायों को अपने खेतों से दूर रख रहे हैं।

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के आठ प्रखंडों के किसान नील गाय के आतंक से परेशान हैं। इनमें मुरौल, मीनापुर, मुशहरी, सकरा, कुढ़नी, कांटी, मोतीपुर और सरैया शामिल है।

इससे पहले भी 2016 में बिहार के मोकामा में 250 नील गायों को शूटर बुलाकर शूट कराया गया था। उस वक्त भी केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी ने इस सामूहिक हत्या का विरोध किया था और पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने इसे नियम संगत बताया था। उसी तर्ज पर फिर मुजफ्फरपुर में नील गायों को शूट कराने की तैयारी है। मेनका गांधी की संस्था की ओर से पशु अधिकारों की पैरोकार गौरी मुलेखी ने बिहार के मुख्य सचिव दीपक कुमार को कानूनी नोटिस भेजा है। उन्होंने इसे आपराधिक घटना बताते हुए इस पर तत्काल रोक लगाने की मांग की है। हालांकि बिहार के वन, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रधान सचिव दीपक कुमार सिंह ने कहा है कि उन्हें नोटिस नहीं मिला है। वे कहते हैं कि विभाग खुद नील गायों को मारने के पक्ष में नहीं है, मगर किसानों के भारी नुकसान को देखते हुए ऐसा आदेश जारी करना पड़ा है।

पुराना राग रंग के छोईड़ नकल करेक लागल हंय

बलदेव प्रसाद शर्मा, गुमला

नागपुरी भाषा आउर गीत संगीत के झारखंड में सबसे धनी मानल जाएला। भाषा का संबंध में तो हमरिन पिछला अंक में तनिक चर्चा कईर रही। येहे लागीन इस वाला अंक में हमरेमन चलु गीत आउर संगीत कर बात करीला। कहल जायला कि आदि काल से जब आदमी खुश होयला तबे गुनगुनाएला। येहे गुनगुनाहट से लय कर जन्म भेलकहय। लय संग सुर और ताल जब जुईट गेलक तब संगीत का निरमाण होलक हय। गीतकर राग भी जे तईर पहर आउर मौसम बदलेला वोहे तईर बदईल जायला। इ बदलाव संगीतकार आउर गायक कर ताकत के बढाय देवेला। थकान के शरीर में सटे नई देवेला । एहे वास्ते नाचेक गावेक आउर बजाय वाला कलाकार राईत भईर अखरा में नाईच गाय आउर बजाय कर बाद भी हमेशा तरोताजा रहेला। कहल जायला कि अकबर कर दरबार में नौ गो रत्न रहंय। जेकर में एगो महान गायक तानसेन भी रहंय। सुईनही जब तानसेन दीपक राग गावत रहंय तो दिया अपने आप बइर जात रहे आउर मेघ राग गावत रहंय तो पानी बइरसेक लागत रहे। यानि हामर कहेक कर मतलब राग में कतना ताकत है उके सहजे समझल जाय सकेला। ऐसे तरी हमरे कर नागपुरिया गीत कर राग में ताकत हय। मौसम कर अनुसार डोमकच आंगनई फगुआ पावस झुमईर आदि आउर पहर कर मोताबिक पहिल संझिया अधरतिया भिनसरिया राग गावल जायला। जे हमरे कर गतर में रकत कर संचार अइसन करेला कि थकावट दूर दूर तक नइ पहुंचेक पारेला। यानि हामर नागपुरिया गीत में वैज्ञानिकता भी है। एक और बात बतायक हम जरूरी समझीला कि नागपुरिया गावेक बजायक आउर नाचेक वाला आदमी गाय बजाय और उकर संगे संग नाईच भी सकेला। यानि तीनों एक साथ कईर सकेला।जबकि आईज काईल देखल जायला जे गावेला उ नई बजायला। जे बजायला उ नाईच नहीं सकेला। यानि तीनों एक साथ नहीं कईर सकेला। येहे सब खुबी हमरे कर नागपुरिया भाषा आउर गीत साहित्य के बड़ा आउर महान बनायक कर मादा राखेला। ई लागीन आईज भी छोटा नागपुर कर भाषा,बोली, गीत, संगीत आउर साहित्य के गहराई से अध्ययन आउर शोध करेक कर जरुरत हय। मुदा आईज काईल देखत्थी नागपुरिया कर जे भी जानकार आहंय आधुनिकता कर पीछे पइड के हमरे कर इ अनमोल विरासत कर टांग तोडेक लागल हंय। समय कर बदलाव कर नाम से पुराना राग रंग के छोईड नकल करेक लागल हयं ।

हमके उम्मीद हय एखनो इकर मूल भावना के बचाय जाय सकेला। मुदा ई तबे संभव होवी । जब नागपुरिया कर जानकार आउर सरकार कर भाषा विभाग मिल कईर के कोशिश करबंय।

योग के साथ स्वच्छ वातावरण बनायें :संन्यासी मुक्तरथ

संवाददाता

रांची : 9 फरवरी 2020, रविवार को पंडित दिनदयाल नगर स्थित सिविल सर्विसेज ऑफिसर्स संस्थान में (आई.ए.एस.क्लब) सत्यानन्द योग मिशन और मॉर्निंग वाकर्स एंड टॉकर्स ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में प्लास्टिकमुक्त वातावरण बनाने को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम अवकाशप्राप्त वरिष्ठ आई.ए.एस.अधिकारी एस.के.सतपथीऔर स्वामी मुक्तरथ जी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया फिर पूरे परिसर में जो भी गुटखा,या अन्य डब्बे का प्लास्टीक कचरा यत्र-तत्र बिखड़ा मिला उसे बृहत अभियान के रूप में चुन-चुन कर साफ किया गया और प्लास्टिकमुक्त वातावरण बनाने का संकल्प लिया गया। संकल्प के बाद स्वामी मुक्तरथ जी ने खुले आकाश के नीचे ध्यान का अभ्यास कराया।

सभी को संबोधित करते हुए स्वामी मुक्तरथ जी ने कहा कि कम से कम योग के साथ जीने वाले लोग स्वच्छता को गंभीरता से लें और अधिक से अधिक लोगों को जीवन में खुशहाल रहने हेतु प्लास्टिकमुक्त परिवेश की महत्ता को समझायें। योग के साथ इकोलॉजी का गहरा संबंध है ।योग सदियों से पर्यावरण को शुद्ध रखने की बात करता है जिसमें शुद्ध विचार, गाय का गोबर, हवन (आयुष्य)आदि का प्रयोग करते आया है। हम मनुष्य ही सभी पशु- पक्षियों के देवता हैं। हर पशु-पक्षी स्वस्थ रहे खुश रहे इसकी सारी जिम्मेवारी हम मनुष्यों की है। प्रकृति तभी संतुलित रहेगी और मनुष्य इसका भरपूर लाभ उठा पायेगा।

एस.के.सतपथी जी ,जिनका प्रकृति से अनन्य प्यार है, वो हर वृक्ष,हर पुष्प और पशु-पक्षियों में आकाश की क्षटाओं में ईश्वर का दर्शन करते हैं उन्होंने कहा ईश्वर प्रकृति में ही वास करते हैं। आकाश के रंग-विरंगे बादल,प्रातः कोयल की मीठी कुक,पक्षियों का मधुर कलरव,साफ-सुथरा स्वच्छ वातावरण, संध्या में कई किश्म के पक्षियों की चहचहाहट, आकाश के तारे,सफेद चांद, प्रातः का उगता बाल सूर्य,भूमि की हरियाली,इनको देखिए और फिर स्वयं से पूछिए क्या भगवान इनमें नही हैं ? वरिष्ठ पत्रकार मनोज प्रसाद ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए सभी को धन्यवाद दिए और प्लास्टिकमुक्त वातावरण बनाने हेतु संकल्प भी करवाये। कार्यशाला में प्रवक्ता के अलावा श्री सुभाष शर्मा, डॉ रामेश्वर सिंह, श्री अरुण,अवनीश कुमार, काशी केजरिवाल, धीरज अग्रवाल,एन.के.मुरलीधर, बी.के.सिन्हा, विश्वनाथ सिंह,पर्यावरण सुधार में अहर्निश लगे हुए मनोज शर्मा जी,विशेष रूप से सहभागी रहे।

कार्यक्रम में स्वामी मुक्तरथ जी ने आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ और भगवान सूर्य के आराधना को कराये।

धान नहीं खरीद पाई बिहार सरकार

अभी तक बिहार के सिर्फ 45 हजार किसान अपनी धान की फसल को सरकार को बेचने में सफल हो पाये हैं। सिर्फ इन्हें ही सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य 1835 रुपये का लाभ मिल सका है। शेष बचे ज्यादातर किसानों को अपनी खरीफ की पैदावार को बहुत कम कीमत में स्थानीय कारोबारियों को बेचने को मजबूर होना पड़ा है। बिहार सरकार ने इस सीजन में 30 लाख मीट्रिक टन धान खरीदने का लक्ष्य रखा था, मगर 3 फरवरी 2020 तक सिर्फ 3.35 लाख मीट्रिक टन धान ही खरीद सकी है। पिछले साल सरकार 31 मार्च को खत्म होने वाले सीजन में भी सिर्फ दो लाख नौ हजार किसानों का 14.16 लाख मीट्रिक टन धान ही खरीद पायी थी। राज्य के अधिकतर धान उत्पादक किसान उस वर्ष भी सरकार को अपनी उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य में बेच पाने में विफल रहे थे और उन्हें एक हजार से 12 सौ रुपये प्रति क्विंटल की दर से अपना धान बिचौलियों को बेचने पर मजबूर होना पड़ा था। देश के दूसरे राज्यों की तरह बिहार में भी सरकार किसानों का धान 8463 स्थानीय सहकारी समितियों जिन्हें यहां पैक्स कहा जाता है, के जरिये हर साल 15 नवंबर से 31 मार्च के बीच की अवधि में खरीदती है।

वैश्विक ताप से महिलाओं के प्रति हिंसा बढ़ी

निर्मल कुमार शर्मा

इंटरनेशनल यूनियन फॉर द कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आइयूसीएन) की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में वैश्विक ताप वृद्धि यानी ग्लोबल वार्मिंग की वजह से हो रहे जलवायु परिवर्तन के कारण महिलाओं के खिलाफ हिंसा कीघटनाएं भी उसी अनुपात में बढ़ रही हैं। इसके मुताबिक दुनिया के पिछड़े देश ग्लोबल वार्मिंग से प्राकृतिक संसाधनों को बचाने में पूर्णतः विफल हो रहे हैं, इसलिए उसी अनुपात में गरीबी भी बढ़ रही है और कम पड़ते प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए जबर्दस्त प्रतिस्पर्धा हो रही है।

दुनिया भर में प्राकृतिक संसाधनों पर पुरुष वर्ग का कब्जा है इसलिए महिलाएं दोयम दर्जे की नागरिक बन कर रह गई हैं। महिलाओं को अपना हक पाने के लिए बहुत ही शर्मनाक समझौता करना पड़ रहा है। मसलन, अफ्रीका के गरीब देशों में महिलाओं को मछली बेचने के लिए वहां के मछुआरों से शर्मनाक शारीरिक समझौता तक करना पड़ता है क्योंकि अगर वे ऐसा नहीं करेंगी तो वे लोग उन्हें मछलियां देना बंद कर देंगे जिससे वे भूखों मर जाएंगी।

जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में भाग लेने वाले 193 देशों के लोगों को यह बात खूब ठीक से समझनी ही होगी कि महिलाओं को अब दोयम दर्जे का नागरिक बनाया और उनका अनवरत शोषण नहीं किया जा सकता। इस धरती के संसाधनों पर जितना पुरुषों का अधिकार है उतना ही अधिकार महिलाओं का भी है। जहां तक पर्यावरण में सुधार करने की बात है, इस मामले में महिलाओं के बनिस्बत प्रकृति और पर्यावरण के प्रति बहुत ही सजग, विनम्र, दयालु व सहिष्णु हैं इसलिए अब भविष्य में महिलाओं के प्रति हिंसा और भेदभावपूर्ण व्यवहार रुकना ही चाहिए। इसी में संपूर्ण प्रकृति, पर्यावरण, पृथ्वी और मानवमात्र आदि सभी की भलाई अंतर्निहित है।

किसानों का स्वास्थ्य बिगाड़ रहा है सेलेनियम

कीटनाशकों और अन्य प्राकृतिक स्रोतों से निकलने वाला सेलेनियम वायु को प्रदूषित कर रहा है। जिसके कारण फेफड़े का कैंसर, अस्थमा और टाइप 2 मधुमेह जैसी बीमारियां हो सकती हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया द्वारा किया गया यह अध्ययन अंतराष्ट्रीय जर्नल एनवायरनमेंटल साइंस एंड टेक्नोलॉजी में प्रकाशित किया गया है। जिसमें सेलेनियम युक्त एरोसोल और उसकी संरचना के बारे में बताया गया है। साथ ही यह कण किस तरह हमारे फेफड़ों और स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है, इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है।

यूसीआर में एटमॉस्फेरिक साइंस विषय की एसोसिएट प्रोफेसर और इस अध्ययन से जुड़ी रोया बहरीनी ने बताया कि यह ऐरोसोल्स ऐसी किसी भी जगह हो सकते हैं, जहां मिटटी में सेलेनियम की मात्रा अधिक हो। यही वजह है कि इससे किसानों को सबसे ज्यादा खतरा है। वहीं प्रदूषित मिटटी और खेतों के पास रहने वाले लोग भी इसके चलते बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

कहीं आप भी बेमतलब आरओ का उपयोग तो नहीं कर रहे हैं?

उएजेंसियां : नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय को आदेश दिया है कि वह जल्द से जल्द अधिसूचना जारी कर उन क्षेत्रों में आरओ पर रोक लगवाए जहां पानी खारा नहीं है। एनजीटी की ओर से यह आदेश 20 मई को दिया गया था हालांकि इसे सार्वजनिक 28 मई को किया गया। एनजीटी ने मंत्रालय को यह भी कहा है कि वे आरओ निर्माता कंपनियों को यह आदेश जारी करें कि उनकी मशीनें पानी की सफाई के दौरान कम से कम 60 फीसदी पानी का शोधन करें। इसके बाद इन मशीनों को और असरदार बनाकर इनकी क्षमता 75 फीसदी शुद्ध पानी देने के लायक बनाई जानी चाहिए। पीठ ने यह स्पष्ट किया है कि आरओ के जरिए बर्बाद होने वाले पानी का इस्तेमाल बागबानी और गाड़ी या फर्श धुलाई में किया जाना चाहिए। इसके अलावा लोगों को आरओ से साफ किए गए पानी में खनिज की मात्रा कम होने या समाप्त होने पर पैदा होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति भी जागरुक किया जाना चाहिए।

एनजीटी का यह आदेश गैर सरकारी संस्था फ्रैंड्स की ओर से दाखिल याचिका के बाद आया है। संस्था के महासचिव शरद तिवारी ने आरओ की कार्यप्रणाली और पानी की बर्बादी को लेकर आपत्ति वाली याचिका एनजीटी में दाखिल की थी। याचिका में आरओ निर्माण करने वाली कंपनियों पर यह भी आरोप लगाया गया था कि एक भी आरओ भारतीय मानक ब्यूरो से प्रमाणित नहीं है। एनजीटी ने अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि जारी होने वाली गाइडलाइन में यह प्रावधान किया जाए कि आरओ निर्माता कंपनी मशीनों में कम से कम 150 मिलीग्राम प्रति लीटर टीडीएस की मात्रा को सेट करें साथ ही कैल्सियम और मैग्नीशियम की न्यूनतम मात्रा भी पानी में सुनिश्चित हो। इसके अलावा आरओ निर्माताओं को खनिज और टीडीएस की मात्रा के बारे में मशीनों पर स्पष्ट लेबलिंग भी करनी चाहिए। शरद तिवारी ने बताया कि आरओ हमें साफ पानी देने के नाम पर जलसंकट पैदा कर रहे हैं। ऐसे इलाके जहां पहले से ही ही सूखे की स्थिति है और पानी की उपलब्धता बेहद कम है वहां आरओ पानी के बहुत छोटे से हिस्से को साफ कर ज्यादातर पानी वेस्ट के तौर पर बाहर निकाल देता है। इसलिए आरओ के डिजाईन में बदलाव किया जाना चाहिए। एनजीटी ने अपने आदेश में कहा है कि 16.3 करोड़ लोग भारत में ऐसे हैं जिन्हें साफ पानी नसीब नहीं होता है।

एनजीटी के आदेश का आधार याचिका के अलावा हाल ही में नागपुर स्थित राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी शोध संस्थान (एनईईआरआई), केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी), आईआईटी दिल्ली की ओर से दाखिल की गई रिपोर्ट है। यह रिपोर्ट एनजीटी के आदेश के बाद तैयार की गई थी। इसमें स्पष्ट तौर पर कहा गया था कि बीआएस मानकों के मुताबिक ऐसा पानी जिसमें 500 मिलीग्राम प्रति लीटर से अधिक टीडीएस की मात्रा है वहीं आरओ से पानी के शुद्धिकरण की जरूरत होती है। संयुक्त रिपोर्ट में बेहद कड़े शब्दों में इस बात की मलानत है कि आरओ निर्माता गलत सूचना फैलाकर लोगों को आरओ मशीन बेच रहे हैं। जहां पानी पहले से ही कम खारा है उस पानी को भी साफ करने की रवायत भारत में बहुत ज्यादा बढ़ गई है। यह यहां के लिए बेहद समान्य बात हो चुकी है जबकि विकसित देशों में इसका बेहद कम इस्तेमाल किया जाता है। भारत में आरओ पहले सिर्फ खारेपन को मिटाने के लिए बनाए गए बाद में इन्हें अन्य प्रदूषक तत्वों को खत्म करने वाला बताया जाने लगा। एनजीटी में याचिका दाखिल करने वाले शरद तिवारी कहते हैं कि आरओ प्रणाली तैयार करने वाली कंपनियां लोगों के बीच एक भय का माहौल बनाती हैं और फिर अपनी मशीनें लोगों के बीच बेच देती हैं। सरकार को जल्द से जल्द इस दिशा में अधिसूचना जारी करनी चाहिए।

कम संतान पैदा करेंगे, तो दुनिया बची रहेगी

एजेंसियां : अब्दुलअजीज, अमीनातु, अबसातु, अब्दुलमनफ. फरहाद, और हां मंसूर भी. ये सब वो नाम हैं जो जैनब गारबा ने भविष्य में होने वाले अपने बच्चों के लिए सोच रखे थे.

फिलहाल उनके दो बच्चे हैं. तीन साल का बेटा राशिद और उसका छोटा भाई बिलयामिनू, जिसका जन्म अभी हाल ही में हुआ है. अब जैनब ने गर्भनिरोधकों का इस्तेमाल करना शुरू किया और ज्यादा बच्चे पैदा करने की अपनी योजना को ठंडे बस्ते में डाल दिया है. उनका पूरा ध्यान अपने दोनों बच्चों को एक बेहतर जिंदगी देने पर है. जैनब कहती हैं, "मुझे गर्व है कि मैं गर्भनिरोधक इंप्लांट का इस्तेमाल कर रही हूं."

जैनब का फैसला वाकई बहुत बड़ा है. वह अफ्रीकी देश नाइजर में रहती हैं जहां प्रति महिला जन्मदर दुनिया में सबसे ज्यादा है. लेकिन नाइजर में पर्यावरणविद और युवा कार्यकर्ता ज्यादा से ज्यादा परिवारों से गर्भनिरोधकों को अपनाने को कह रहे हैं. उनके मुताबिक इससे जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने में मदद मिलेगी.

संयुक्त राष्ट्र के विकास कार्यक्रम के इस्सा लेले कहते हैं कि जलवायु परिवर्तन की वजह से नाइजर के तापमान में तेजी से इजाफा हुआ है और नदियों में पानी कम हुआ है. सूखे और बाढ़ की समस्या भी बढ़ी है. ऐसे में, जनसंख्या तेजी से बढ़ने के कारण खाद्य और जल आपूर्ति के लिए जोखिम पैदा हो रहे हैं. पर्यावरण के लिए काम करने वाले एक समूह यंग वॉलेंटियर फॉर दि एनवार्नमेंट के निदेशक सानी आयोबा का कहना है कि नाइजर में प्रति महिला बच्चों का औसत 7.6 है.

आयोबा के अपने तीन बच्चे हैं. उनका कहना है, "हम यह नहीं कह रहे हैं कि बच्चे पैदा ही मत कीजिए." उनका समूह लोगों से गर्भनिरोधकों का इस्तेमाल कर बच्चों की जन्म दर को धीमा करने की वकालत करता है.दुनिया भर में बढ़ती आबादी के कारण पृथ्वी के सीमित संसाधन दबाव में हैं. जितने ज्यादा लोग होंगे, उतना ज्यादा खाना, परिवहन, ऊर्जा और अन्य संसाधनों की जरूरत होगी और इन सब की वजह से आखिरकार जलवायु परिवर्तन बढ़ेगा. अमीर देशों में स्थिति ज्यादा खराब है. वहां गरीब देशों के मुकाबले लोगों को ज्यादा संसाधनों की जरूरत होती है.लेकिन नाइजर जैसे देशों में भी होने वाले हर जन्म का मतलब है कि देश के सीमित संसाधनों का बंटवारा ज्यादा लोगों के बीच होगा.

इससे दुनिया संकट की तरफ बढ़ रही है क्योंकि जलवायु परिवर्तन की वजह से पहले ही खेती बाड़ी और खाद्य आपूर्ति प्रभावित हो रही हैं.

राजधानी नियामे के तालाज्ये इलाके में एक क्लीनिक में जैनब ने सितंबर में अपने बाजू में गर्भनिरोधक इंप्लांट कराया. एक मिडवाइफ ने सूईं की मदद से उनकी बांह में दो छेद किए और उनमें इंप्लांट लगा दिया. इस काम में पांच मिनट लगते हैं. लेकिन इससे तीन साल तक वह गर्भधारण नहीं कर पाएंगी. मिडवाइफ का कहना है कि इस इंप्लाट की कामयाबी दर 99 प्रतिशत है.

रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया में जनसंख्या का स्तर असमान रूप से बढ़ा है. 1950 में दुनिया में कुल आबादी जहां 2.6 अरब थी वहीं 2017 तक यह बढ़कर 7.6 अरब हो गई. जनसंख्या वृद्धि के असमान स्तर में आय और इलाके के हालात की भी बड़ी भूमिका होती है.

नाइजर में अब तक गर्भनिरोध के तौर पर गोलियां ही सबसे लोकप्रिय रही हैं, लेकिन एक अंतरराष्ट्रीय चैरिटी संस्था मैरी स्टॉप्स की तरफ से चलाए जा रहे इस क्लीनिक में गर्भनिरोधक इंप्लाट किए जा रहे हैं. इस क्लीनिक में बहुत सी महिलाएं आ रही हैं और अपनी त्वचा में इंप्लांट करा रही हैं.

नाइजर के सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्रालय में परिवार नियोजन निदेशक इस्सोफोऊ हारोऊ कहते हैं कि सरकार परिवार नियोजन के कुछ पहलुओं का समर्थन कर रही है और इसके लिए धन भी आवंटित किया जा रहा है. लेकिन कई विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार ने गर्भनिरोधक खरीदने के लिए जो 3.4 लाख डॉलर का राष्ट्रीय बजट निर्धारित किया है, वह पर्याप्त नहीं है.

नाकाफी बजट के साथ साथ समाज में गर्भनिरोधकों के लिए स्वीकार्यता भी बड़ी चुनौती है. नाइजर में 99 प्रतिशत आबादी मुसलमान है. देश के इस्लामिक एसोसिएशन के प्रमुख सिता अमादोऊ कहते हैं कि अगर बच्चों की ठीक से देखभाल हो सकती है तो इस्लाम परिवार में बच्चों की संख्या सीमित करने की वकालत नहीं करता. इसी कारण नाइजर में परिवार नियोजन के लिए काम करने वाले संगठनों का काम मुश्किल हो जाता है. वे पिछले साल से मुहिम चला रहे हैं कि परिवार नियोजन को अपना कर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटा जा सकता है.

कार्यकर्ताओं ने इस संबंध में संसद के सदस्यों और कैबिनेट मंत्रियों से भी मुलाकातें की हैं. इसके अलावा वे सामुदायिक नेताओं से भी मिले हैं. पिछले दिनों नियामे में हुए एक कार्यक्रम में आयोबा ने कहा, "बात सिर्फ कृषि में निवेश की नहीं है, बल्कि हमें गर्भनिरोधकों और परिवार नियोजन में भी निवेश करना होगा." तभी वहां मौजूद एक व्यक्ति ने कहा कि मुस्लिम अधिकारी इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेंगे.

जलवायु परिवर्तन से बढा टिड्डियों का हमला

हाल के दिनों में राजस्थान और गुजरात में लाखों एकड़ जमीन पर खड़ी फसल की बर्बादी की वजह टिड्डी दल का हमला है। पूर्व पौधा संरक्षण अधिकारी और डेजर्ट लोकस्ट एक्सपर्ट अनिल शर्मा ने नीमली, राजस्थान में चल रहे अनिल अग्रवाल डायलॉग 2020 में कहा कि टिड्डी दल का एक ही लक्ष्य होता है, रास्ते में कहीं भी हरियाली दिखे तो उसे चट कर जाओ। जलवायु परिवर्तन से टिड्डों के हमले को जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि अफ्रीकी देश, खाड़ी देशों में बारिश की वजह से टिड्डों की संख्या बढ़ी है।

थार रेगिस्तान में जलवायु परिवर्तन की वजह से टिड्डों का प्रजनन तेजी से हो रहा है। जलवायु परिवर्तन की वजह से बेमौसम बारिश हो रही है जिससे टिड्डों की संख्या काफी बढ़ गई है। ये टिड्डे उड़कर भारत आ जाते हैं। पिछले वर्ष टिड्डों ने गुजरात और राजस्थान की 3,92,093 हेक्टेयर जमीन की हरियाली को चट कर दिया। वह कहते हैं कि टिड्डे से बचने का कोई तरीका किसान और सरकारों के पास नहीं दिखता।

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक मनोरंजन सिंह द्वारा प्रकाशित तथा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित और सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2, टीवीएस गली, रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः एम.के.शर्मा * (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : **JHAHIN/2019/78094**, email:greenrevolt2019@gmail.com.☎ 0651-2283018, 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।